एक आवश्यक निवेदन

आज कल हिन्दी साहित्य की श्री-वृद्धि और सम्यक उन्नति देख कर किस हिन्दी हितैषी का हृदय आह्लादित नहीं हो रहा है। इधर ५, ६ वर्षों से लगातार अच्छी २ पुस्तकें निकल रही हैं। अब बंगला के पुस्तकों के अनुवादकों और उनके प्रकाशकों का बाज़ार गरम नहीं, केवल उन्हीं पुस्तकों की चाहना करने वाले मन चले पाठक नहीं रहे, परन्तु हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर सीरीज़, गाँधी गौरव ग्रन्थ माला, हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, ज्ञान मण्डल काशी, इण्डियन प्रस, आदि के संचालक अच्छी २ पुस्तकें निकाल कर मातृ भाषा और देश की अच्छी सेवा कर रहे हैं। इन पुस्तकों के पाठकों की संख्या में भी उत्तरोतर वृद्धि हो रही है। फिर ऐसी अच्छी अच्छी पुस्तकमालाओं के रहते हमने इस ग्रन्थमाला को निकालना क्यों आरम्भ किया, ऐसा प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

कोई दस, बारह वर्ष से विद्यार्थियों को शिक्षा देने और उनके निरन्तर सहवास से हमें पूरा अनुभव हो गया है कि आधुनिक स्कूल और कालेज के विद्यार्थियों को सब से अधिक उनके चरित्र निर्माण और स्वास्थ्य सुधारने वाली शिक्षा की आवश्यकता है। आज स्कूल और कालेज से निकलते ही युवक किसी योग्य नहीं रह जाते। वे अपने चरित्र और स्वास्थ्य दोनों से हाथ धो बैठते हैं। इन विद्यार्थियों के अभिभावक अथवा संरक्षक गण उन्हें बिलकुल स्कूल और कालेज के भरोसे छोड़ देते हैं और उनके चरित्र की ओर जरा भी ध्यान नहीं देते। उधर अध्यापकों को इन बातों की शिक्षा देने की कहां फुरसत? वहां तो जैसे तैसे कोर्स की किताबें पढ़ाई और अपना रास्ता लिया!

इन्हीं त्रुटियों की पूर्ति के लिये आज से कोई छः वर्ष पहले 'छात्र हितकारी' नामक एक पुस्तकमाला निकालनी आरम्भ की। १९१८ और १९१९ ई० में ४-५ पुस्तकें निकली और नवयुवकों और उनके अभिभावकों ने इन्हें इतना पसन्द किया कि साल ही दो साल के भीतर इनके कई संस्करण निकालने पड़े। परन्तु बाद के २-३ वर्षों में कई झंझटों में पड़ जाने से प्रकाशन का कार्य प्रायः शिथिल रहा है। केवल पारसाल 'ब्रह्मचर्य ही जीवन है' नामक नई पुस्तक निकली।

यद्यपि वे झंझटें और जिम्मेदारियां कम नहीं हुई हैं, प्रत्युत पहले से भी कई गुनी बढ़ गई हैं, परन्तु अब स्थायी ऐसा प्रबन्ध कर लिया है कि प्रकाशन का कार्य सुचारु रूप से लगातार चलता रहे। 'तरुण भारत' के भूत पूर्व सम्पादक गणेश पाण्डेय इस काम में पूरी सहायता कर रहे हैं। आशा है कि इनके सहयोग से नव युवकों की अधिक सेवा करने में समर्थ होंगे।

परन्तु यह सब हिन्दी के प्रेमी पाठकों, विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों की सहायता पर निर्भर है। यदि प्रत्येक प्रेमी पाठक स्वयं स्थायी ग्राहक बन कर अपने दो एक इष्ट मित्रों को भी स्थायी ग्राहक बनाने की कृपा दिखलाये तो हमारी कठिनाई बहुत कुछ हल हो सकती है। और प्रचार कार्य में अधिकाधिक सुभीता हो सकता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारा नम्र निवेदन योंही खाली नहीं जायगा।

अभी पहले के प्रकाशित पुस्तकों के नवीन संस्करण निकल रहे हैं। कुछ नई पुस्तकें प्रेस में छपने के लिये दी गई हैं और कुछ लिखी जा रही हैं जिन्हें लेकर हम शीघ्र ही सेवा में उपस्थित होंगे।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा
सम्वत् १९८१ वि०

—प्रकाशक।

यह पुस्तक टेक्स्ट बुक कमेटी यू. पी. द्वारा पारितोषिक और पुस्तकालय के लिये स्वीकृत की गई है।

श्री परमहंस रामतीर्थ कृत

सफलता की कुंजी

OR

The Secret of Success

BY

SWAMI RAM TIRTHA M.A.

अनुवादक और प्रकाशक

बाबू केदार नाथ गुप्त,

दारागंज हाई स्कूल

प्रयाग।

4th EDITION
2000 COPIES.

1924

Price Annas 4.

प्रकाशक का नम्र निवेदन ।

प्रिय पाठक वृन्द :—

प्रत्येक देश की उन्नति और अवनति उस देश के साहित्य पर अवलम्बित है । यदि साहित्य सजीव तो वह देश भी सजीव और यदि साहित्य निर्जीव तो उस देश को भी निर्जीव समझना चाहिये । इसके कहने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती कि हमारा हिन्दी साहित्य अन्य साहित्यों की अपेक्षा अभी कितना पीछे पड़ा हुआ है । हर्ष की बात है कि कुछ उदार हृदय मातृभाषा प्रेमी कई ग्रंथ मालायें खोल कर हिन्दी साहित्य की सेवा करने की ओर लगे हुये हैं । हम ने भी उन्हीं की तरह उसी में योग देने का प्रण किया है।

हमारी पुस्तक माला का नाम **छात्र हितकारी पुस्तक माला** रहेगा । हमारा उद्देश दूसरे पुस्तक निकालनेवालों से भिन्न होगा । जिस प्रकार ओङ्कार आदर्श चरित्रमाला ने जीवन चरित्र निकालने का और विज्ञान परिषद् ने वैज्ञानिक पुस्तकों के निकालने का भार अपने ऊपर लिया है उसी प्रकार विशेषतः छात्रों के लिये सदाचार संबन्धी तथा अन्य बालहितकारी पुस्तकों के निकालने का भार हमने अपने ऊपर लिया है । ये पुस्तकें सर्वसाधारण के लिये भी लाभकारी होंगी । अपने अन्य मित्रों की सहायता से हम इस ग्रन्थ माला को अद्वितीय बनाने का प्रयत्न करेंगे । अन्त में शिक्षा विभाग के कर्मचारियों से प्रार्थना है कि वे हमारी पुस्तकें मंगा कर छात्रों को पारितोषिक रूप में दें ताकि ये उन्हें पढ़कर सदाचारी बनें और आगे चलकर देश और धर्म की सेवा करने में भाग लें ।

भूमिका ।

बांस जब तक कच्चा है तब तक उसे आप जिधर चाहें मोड़ सकते हैं; जब पक जाता है तब किसी ओर नहीं मोड़ा जा सक्ता । देश के छात्र उसी प्रकार कच्चे बांस हैं, इनको बचपन में ही जिधर मोड़िये उधर मुड़ जाँयगे । आवश्यकता है कि बाल्यावस्थाही से उनके विचार पवित्र और आचरण शुद्ध और उच्च बनाये जांय ताकि वे सच्चे नागरिक बनकर देश और धर्म की सेवा करने में हाथ बटावें ।

स्वामी रामतीर्थ के लेख बद्ध व्याख्यानों से बढ़ कर सदा चारी और पवित्र विचारी बनाने वाले साधन और कहां मिल सक्ते हैं । यही समझकर सीकरेट आफ़ .सकसेस (Secret of Success) नामक व्याख्यान का अनुवाद करके, जो स्वामी जी ने अमेरिका में दिया था, हमने छात्र हितकारी पुस्तक माला डंकीनगंज मिरजापुर से प्रकाशित करने का साहस किया है । छात्र हितकारी पुस्तक माला ने सुन्दर २ छात्र हित संबंधी पुस्तकों के निकालने का दृढ़ निश्चय किया है । इनसे यह कदापि न समझ लेना चाहिये कि इन पुस्तकों से केवल छात्रों ही का लाभ होगा । नहीं, इन के पढ़ने से नवयुवकों अथवा सर्वसाधारण को उतना ही लाभ होगा जितना लाभ छात्रों को होने की संभावना है ।

अनुवाद अक्षरशः और सीधी सादी भाषा में किया गया है किन्तु जहां पद विन्यास में कठिनता आ पड़ी है वहां भावानुवाद कर दिया है। बीच बीच में बहुत सी अंगरेज़ी कवितायें आ गई थीं। चित्रमय जगत के भूत पूर्व सम्पादक, हिन्दी के प्रसिद्ध सेवी और मेरे अंतरङ्ग मित्र पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी ने उनको ललित हिन्दी पद्यों में बद्ध करके उस कठिनता को दूर कर दिया। अतः हम उक्त पंडित जी को इस कृपा के लिये अनेक धन्यवाद देते हैं।

अंत में पाठकों से त्रुटियों की क्षमा मांगते हुये हम अपने कथन को समाप्त करते हैं।

१. १०. १८. के. ना. गु.

सफलता की कुंजी।

एक मनुष्य ने तीन बच्चों के हाथ में पांच सेंट (Cent) रखकर उनसे कहा कि इसे बराबर बराबर आपस में बांट लो। उन्होंने सोचा कि इस से कोई वस्तु मोल लेकर बांटी जाय तो अच्छा हो। उन लड़कों में से एक अंगरेज़ था, दूसरा हिन्दू था और तीसरा मुसलमान था। वे एक दूसरे की भाषा पूर्ण रूप से नहीं समझते थे, इसलिये बड़े चक्कर में पड़े कि क्या करना चाहिये। अंग्रेज़ ने कहा, भाई वाटर मेलन (हिनवाना) मंगाइयें। हिन्दू ने कहा नहीं नहीं हमें हिनवाना बहुत पसंद है। मुसलमान ने कहा अजी साहब आप क्या बकते हैं तरबूज़ ख़रीदिये तरबूज़। इस प्रकार एक दूसरे के मतलब को न समझते हुये वे अपनी अपनी राग अपनी इच्छानुसार अलापते रहे। उनमें बड़ा बखेड़ा उठ खड़ा हुआ। वे टहलते जाते थे और झगड़ा करते जाते थे। संयोग वश वे एक ऐसे पुरुष के पास जा निकले जो अंगरेज़ी, फ़ारसी हिन्दुस्तानी तीनों भाषाओं को समझ सक्ता था। वह उनकी बातों को सुनकर मन ही मन हंसने लगा और बोला, "अच्छा मैं आप लोगों के झगड़े को अभी निपटाये देता हूं"। तीनों इस बात पर सहमत हो गये। इस मनुष्य ने सेंट उनसे ले लिया और तीनों

को एक ओर रखा, फिर वह स्वयं फलवाले की दूकान में गया और पांच सेण्ट का एक बड़ा हिनवाना ख़रीद लाया। उसने उसे छिपाकर रख दिया और एक एक करके लड़कों को बुलाने लगा। उसने पहिले अंग्रेज़ बच्चे को बुलाया और चुपचाप हिनवाने का तिहाई भाग काटकर उसके हाथ में रख दिया और बोला, "क्यों, तुम इसी वस्तु को चाहते थे न"? बच्चा बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने धन्यवाद देकर प्रसन्नता पूर्वक उसे ले लिया और उछलता हुआ यह कह कर बाहर चला गया कि जिस चीज़ की मुझे आवश्यकता थी वह मिल गई। उस पुरुष ने फिर मुसल्मान बच्चे को बुलाया और हिनवाने का दूसरा टुकड़ा उसके हाथ में रखकर बोला क्यों, तुम्हें इसी की आवश्यकता थी न"? बच्चा फूला न समाया। उसने कहा यही तरबूज़ है हां मैं इसी को चाहता था। वह भी हँसता २ बाहर चला गया। अब हिन्दू बच्चे की बारी आई। तीसरा टुकड़ा उसे दे दिया गया और उससे पूछा गया "क्यों, इसी के लिये न इतनी देर से चिल्ला रहे थे"। बच्चा प्रसन्न हुआ और कहने लगा "हां इसी हिनवाने के लिये मैं इतना उत्सुक हो रहा था"।

झगड़ा क्यों उठ खड़ा हुआ? लड़कों में बिगाड़ क्यों हुआ? केवल नाम के कारण और कोई बात नहीं। नाम के झगड़े को एक ओर रख कर असली स्वरूप को देखिये। पता चलेगा कि वाटर मेलन, तरबूज़, हिनवाना नाम में तो भिन्न हैं किन्तु अर्थ में हैं एक ही। उन से केवल एक ही वस्तु का बोध होता है। संभव है कि फ़ारस का तरबूज़ इंगलैंड के तरबूज़ से कुछ बड़ा हो। संभव है कि हिन्दुस्तान के

तरबूज़ इंगलैंड के तरबूज़ से कुछ छोटे हों किन्तु (स्मरण रहे) वस्तुत. फल एक ही है। बड़े छोटे की कुछ परवाह नहीं।

इसी प्रकार जब टंटे बखेड़े बहस मुबाहसे राम के देखने में आते हैं। राम जब ईसाइयों को यहूदियों के साथ, यहूदियों को मुसलमानों के साथ, मुसलमानों को ब्राह्मणों के साथ, ब्राह्मणों के बौद्धों के साथ और बौद्धों को दूसरों के साथ लड़ता झगड़ता देखता है तो उसे हँसी आती है। इन झगड़ों का मुख्य कारण नाम है। नाम के परदे को हटाकर भीतरी तत्व पर दृष्टि डालिये। आप को विशेष अन्तर नहीं मिलेगा।

राम बहुधा 'वेदान्त' का नाम लिया करता है। इसी कारण कुछ लोग राम की बातों को सुनना पसंद नहीं करते। दूसरा मनुष्य बुद्धदेव के नाम से धर्म्म का प्रचार करता है। बहुत से लोग उसकी भी बातों को नहीं सुनते क्योंकि बुद्धदेव का नाम उनके कानों में खटकता है। ज़रा अधिक बुद्धि-ख़र्च कीजिये। यह बीसवीं शताब्दि है। इसमें अब नामों की ओर विशेष ध्यान न देना होगा। जो राम कहता है या जो दूसरे लोग कहते हैं उसी के असली तत्व का विचार कीजिये। केवल नाम से न घबड़ा जाइये। प्रत्येक बात की परीक्षा स्वतंत्र रूप से कीजिये। और फिर देखिये कि वह ठीक है या नहीं।

किसी धर्म को यह समझ कर न ग्रहण करो कि यह सब से प्राचीन है। प्राचीन होना ही सच्चे धर्म का प्रमाण नहीं है। कभी प्राचीन घरों को गिरवा देना और प्राचीन

कपड़ों को उतार कर फेंक देना पड़ता है। कोई भी नवीन बात यदि बुद्धि गवाही देती हो, तो उतनी ही सुन्दर है जितना सुन्दर कि गुलाब का फूल जिसमें ओस की बूंदें चमक रही हों। किसी धर्म्म को इस कारण न ग्रहण करो कि वह सब से नवीन है। नवीन बातें सर्वदा अच्छी नहीं होतीं क्योंकि उनकी परीक्षा भले प्रकार नहीं हुई। किसी धर्म को इस कारण स्वीकार न करो कि इसे बहुत लोग मानते हैं। बहुत से लोग तो पैशाचिक (मूर्खतापूर्ण) धर्म को भी मानते हैं। समय था जब कि बहुत से लोग गुलामी (दासत्व) को अच्छा समझते थे किन्तु इसके यह अर्थ नहीं है कि गुलामी एक उत्तम वस्तु है। किसी धर्म को इस कारण न ग्रहण करो कि इसे चुने चुने लोगों ने स्वीकार किया है। कभी २ चुने हुये लोग अँधेरे में ठोकरें खाते हैं। किसी धर्म को इस लिये न ग्रहण करो कि इसे एक बड़े त्यागी सन्यासी ने जन्म दिया है। बहुत से ऐसे सन्यासी पड़े हैं जिन्होंने सब त्याग दिया है किन्तु जानते कुछ नहीं। इन्हें एक प्रकार के पागल समझना चाहिये।

किसी धर्म को इस कारण ग्रहण न करो कि इसे राजाओं ने स्वीकार किया है। राजाओं का आत्मिक ज्ञान प्रायः बहुत न्यून होता है। किसी धर्म को इस कारण ग्रहण न करो कि उसे एक उच्च चरित्रवाले पुरुष ने जन्म दिया है। उच्च कोटि के मनुष्य प्रायः सचाई की मीमांसा करने में फलीभूत नहीं हुए। मनुष्य की पाचन शक्ति भले ही अच्छी हो किन्तु संभव है वह पाचन क्रिया से बिल्कुल अनभिज्ञ हो। चित्रकार को लीजिये। उसका रंग रूप संसार भर में सब से निकृष्ट है। परन्तु वह

एक मनोहर, उत्तम और भड़कीली तसवीर बना सकता है। संसार में बहुत से ऐसे भी पुरुष हैं जो देखने में बड़े कुरूपवान हैं किन्तु उनके मुख से अच्छी अच्छी बातें निकलती हैं। महात्मा साक्राटीज़ इन्हीं मनुष्यों में थे। सरफ्रांसिस बेकन न तो धर्मात्मा ही थे और न उनका आचरण ही बहुत अच्छा था तब भी उन्होंने अच्छी अच्छी पुस्तकों की रचना की। उन्होंने पहिले ही पहिल न्याय शास्त्र का उपदेश किया। वे दर्शन शास्त्र के बड़े भारी ज्ञाता थे। किसी धर्म को इस कारण स्वीकार न करो कि इसे एक बड़े प्रख्यात महानुभाव ने ग्रहण किया है। सर आइज़क निउटन भी तो एक बड़े प्रख्यात मनुष्य थे किन्तु उनके प्रकाश (light) के सिद्धान्त को लिबनिट्ज ने एक दम खंडित कर दिया। गुणों को देखकर किसी बात अथवा धर्म को स्वीकार करो। उस पर खूब विचार करो। बार बार विवेचना करो किन्तु अपनी स्वतंत्रता बुद्धदेव, यीसूमसीह मुहम्मद अथवा कृष्ण के हाथ न बेचो। यदि बुद्धदेव यीसू मसीह और मुहम्मद साहब ने धर्म के प्रचार में भिन्न २ साधनों का अवलम्ब लिया हो तो इसमें कोई अनुचित बात नहीं, क्योंकि उनके जन्म भिन्न भिन्न समय में हुए थे। उन्होंने अपने सन्मुख उपस्थित प्रश्नों को हल कर डाला था और अपनी बुद्धि से काम लिया था। इसी में उनका गौरव था। आप लोग वर्तमान समय में रह रहे हैं। सब बातों की जांच पड़ताल आप को स्वयं करना चाहिये। उठिये स्वतंत्र बनिये और प्रत्येक बातों में स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी बुद्धि से काम लीजिये। यदि आप के पूर्वजों ने किसी एक विशेष धर्म को

ग्रहण किया था तो उनका ऐसा करना उचित था परन्तु आप की मुक्ति आप के हाथ में है, आप के बाप दादों के हाथ में नहीं है। वे बेचारे तो एक विशेष धर्म के अनुयायी थे, पता नहीं कि उनकी मुक्ति हुई अथवा नहीं, किन्तु अपनी मुक्ति के लिये तुम्हें स्वयं परिश्रम करना पड़ेगा। जो बात आप के सामने आवे जांच पड़ताल स्वतंत्र होकर आप स्वयं कीजिये (संभव है) आप के पूर्वजों को केवल एक ही धर्म की सत्ता दिखलाई गई हो किन्तु आप के सन्मुख हर प्रकार का धर्म, हर प्रकार का दर्शन, और हर प्रकार का विज्ञान मौजूद है। यदि आप अपने पूर्वजों के धर्म को इसलिये मानते हो कि वह आप के सामने रक्खा गया है तो बौद्ध धर्म और वेदान्त को भी आप लोग क्यों नहीं मानते। वे भी तो आप के सन्मुख रक्खे जा रहे हैं।

सचाई किसी की अपनी संपत्ति नहीं है। सचाई यीसूमसीह की संपत्ति नहीं है। यीसूमसीह के नाम से सचाई के प्रचार का कोई अधिकार नहीं है। सचाई बुद्धदेव की सपत्ति नहीं है, बुद्धदेव के नाम से सचाई के प्रचार करने का कोई अधिकार नहीं है। सचाई मुहम्मद की संपत्ति नहीं है और न कृष्ण की सम्पत्ति है। सचाई में सब का दावा है। यदि किसी ने पहिले सूर्य्य की धूप ली थी तो तुम भी आज धूप ले सकते हो। यदि कोई सोने का मीठा पानी पीता हो तो तुम भी पी सकते हो। तुम्हारे भाव प्रत्येक धर्म के प्रति इसी प्रकार का होना चाहिये। यदि किसी पुरुष को अपने पड़ोसी का धन मिलता हो तो वह उसके लेने में कुछ भी आनाकानी न करेगा। परन्तु यदि वही पड़ोसी बड़े आवभाव के साथ अपना आध्यात्मिक

अथवा धार्मिक कोष हमें सौंप रहा हो जो संसारी द्रव्य से कहीं बढ़कर है, तो हम ग्रहण करने की अपेक्षा उसका खंडन करने के लिये उद्यत हो जायेंगे। क्या यह आश्चर्य जनक बात नहीं है। राम वेदान्त आप के सामने इसलिये नहीं रखता कि आप वेदान्ती कहे जांय। नहीं ऐसा नहीं उसकी शिक्षाओं पर ध्यान दें। मनन् करें यहां तक कि उन्हें अपनी बना लें। इच्छा हो तो खीष्ट धर्म के नाम से पुकारें, नामों की हमें कुछ भी परवाह नहीं। राम एक ऐसे धर्म की अपील आप से करता है जिसका उल्लेख केवल बाइबिल और प्राचीन धर्म ग्रन्थों में ही नहीं किया गया, किन्तु जो आधुनिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक पुस्तकों में भी पाया जाता है। राम का अर्थ उस धर्म से है जो गली गली में मौजूद है, जो पत्तियों में लिखा हुआ है, जिसका गुणानुवाद हवा और झरने करते हैं और जो तुम्हारे रग २ में जोश मार रहा है। राम का अर्थ उस धर्म से है जो आपका है, जो आप के दैनिक काम से सम्बन्ध रखता है, और जिसके अभ्यास के लिये किसी विशेष गिरजे घर में जाने की आवश्यकता नहीं है। राम का अर्थ उस धर्म से है जिसका उपयोग आप दैनिक कार्य्यों और रसोईघर या भोजनालय में कर सकते हैं और जिसके अनुसार हर जगह आप अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं चाहे हम उसे वेदान्त न कहें उसका कोई दूसरा ही नाम रख दें। वेदान्त के मुख्य अर्थ हैं सचाई, सचाई आप की है। इस पर राम का या किसी हिन्दू का उतना ही अधिकार है जितना आप का। इसमें किसी एक का दावा नहीं है। यह सब की संपत्ति है।

अब हम प्रमाण देकर बतलायेंगे कि वेदान्त से हमारे मार्ग निष्कंटक और जीवन में कार्य्य सुखमय किस प्रकार बन सकते हैं। हम अब अमली वेदान्त के विषय में बोलेंगे जिसे सफलता की कुंजी कहते हैं। वेदान्त को कार्य्यरूप में परिणित करने ही का नाम सफलता की कुंजी है। प्रत्येक साइंस की तरह वेदान्त के भी दो अंग हैं, सिद्धान्तिक और वेदान्तिक। यहां हम सिद्धान्तिक को छोड़कर केवल अमली ही वेदान्त की व्याख्या करेंगे।

कुछ लोगों का कहना है कि वेदान्त से हमें यही शिक्षा मिलती है कि संसार दुखमय और आशा रहित है। राम ऐसे लोगों से प्रार्थना करता है कि आप लोग ऐसी ऐसी अपनी दलीलें अपने पास रखिये दूसरों को वृथा चक्कर में न डालिये। ज़रा छिछोरपन को छोड़कर गम्भीरता से काम लीजिये और तब बताइये कि उत्साह, स्फूर्ति, शक्ति, सफलता आदि २ गुणों की शिक्षायें हमें वेदान्त से मिलती हैं अथवा नहीं। आप मुझ से यह न पूछिये कि भारतवर्ष के रहने वाले वेदान्त के अनुकूल चलते हैं कि नहीं। राम स्पष्टरूप से केवल यही कहना चाहता है कि वेदान्त हिन्दुस्तानियों की कोई अपनी संपत्ति नहीं है। इसपर सब का समान अधिकार है। यह आप का जन्माधिकार है। अमेरिका निवासी अपने व्यवहारिक जीवन में इसका अधिक प्रयोग करते हैं यही कारण है कि उन्हें इस ओर अधिक सफलता होती है। हिन्दुस्तान के रहने वाले अमेरिका निवासियों की तरह व्यवहार में इससे काम नहीं लेते इसी लिये द्रव्य के मामले में वे पीछे पड़े हुये हैं। राम अपनी गढ़ी हुई बात नहीं कह रहा है बल्कि सच्चा प्राकृतिक वेदान्त

आप के सामने रख रहा है। अपनी सारी बुद्धि और विवेक इसके समझने में लगा दीजिये तब आप को मालूम होगा कि इसमें कैसे-कैसे जौहर भरे हुये हैं; प्रत्येक कार्य्य में इसके अनुसरण से कितनी अधिक सफलता प्राप्त होती है और मनुष्य मात्र को इसके अनुसार चलना कितना आवश्यक है।

सफलता की कुंजी के कई भेद हैं और इसकी प्राप्ति के बहुत से साधन हैं। इन साधनों में से हम एक एक को लेंगे और बतलायेंगे कि इनकी मीमांसा हिन्दू धर्म शास्त्रों में किस प्रकार की गई है।

सफलता का पहिला साधन

"काम"

ह सभी जानते हैं कि लगातार अभ्यवसाय ही सफलता की कुंजी है और काम में जुते रहना ही सफलता का पहिला साधन है। आलसी मनुष्य को सांसारिक झगड़ों के कारण जीवन भार हो जाता है। वह जीवित रही नहीं सक्ता अवश्य मर जायगा। प्रायः लोग कह बैठते हैं कि लगातार परिश्रम और निर्मल, निराकार पवित्र आत्मा में क्या सम्बन्ध है, क्या वेदान्त त्याग और शांति का उपदेश देकर हमें आलसी नहीं बनाता? नहीं यह बिल्कुल गलत है। लोगों ने त्याग के अर्थ को नहीं समझा यही कारण है कि वे ऐसी ऐसी बिना सिर पैर की शंकायें किया करते हैं।

वेदान्त के अनुसार काम करना ही आराम है। यह एक लोक विरुद्ध और आश्चर्य जनक कथन प्रतीत होता है किन्तु वेदान्त इसी बात का उपदेश करता है। उत्कट परिश्रम करनेवाले की ओर ज़रा आँख उठाकर देखिये। दूसरे लोग कहेंगे कि वह काम में जी तोड़ कर लगा हुआ है परन्तु यदि उससे पूछा जाय तो वह यही कहेगा कि मैं अपनी समझ से कुछ नहीं कर रहा हूं। दूर से देखने वालों को इन्द्र धनुष में बहुत से रंग दिखलाई पड़ते हैं किन्तु यदि वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो वहां रंग इत्यादि कुछ नहीं हैं। नेपोलियन, वाशिङ्गटन या अन्य योद्धाओं की ओर दृष्टिपात कीजिये जब वे घमासान युद्ध कर रहे हों। मालूम पड़ेगा कि शरीर तो अपने आप काम कर रहा है किन्तु उन्हें कुछ खबर नहीं। उनकी आत्मायें अपने अस्तित्व को भूल जाती हैं। वे प्रशंसा की भूखी नहीं रहतीं। अतः इस प्रकार का अविरत काम ही योग के ऊंचे दरजे तक पहुंचाने में आप को सहायता कर सकता है।

वेदान्त कहता है कि अविरत काम के द्वारा आप अपने छोटे शरीर को भूल जांय; शरीर और मस्तिष्क को साथ साथ इस प्रकार लगा दें कि परिश्रम बिल्कुल मालूम ही न पड़े। कवि उसी समय अच्छी कविता कर सक्ता है जब वह यह भूल जाता है कि कविता मैं कर रहा हूं। उस मनुष्य से जाकर ज़रा पूछिये जिसको कभी हिसाब के गूढ़ प्रश्नों के हल करने का संयोग हुआ हो। तुरन्त ही कहेगा कि जिस समय "यह काम मैं कर रहा हूं" ऐसा विचार मेरे हृदय से निकल जाता है मेरे सब प्रश्न उसी समय हल हो जाते

है और मेरी सारी कठिनाइयां दूर हो जाती हैं। जितना अधिक मनुष्य अपने आपको भूलेगा उतनी ही अधिक खूबी के साथ वह काम कर सकेगा।

इस प्रकार वेदान्त उपदेश करता है कि सच्चे काम द्वारा अपने अस्तित्व को भूल जाव और जीवन की प्रत्येक बातों को उस महान् शक्ति के सच्चे सिद्धान्तों पर छोड़ दो जिसे जीवात्मा या परमेश्वर कहते हैं। विचार शील, दार्शिनिक, कवि, वैज्ञानिक अथवा कोई अन्य मनुष्य अपने को चारों ओर से खींचकर जब काम में तन मन से लग जाय यहाँ तक कि उसे शरीर की भी सुध बुध न रहे तब कहना चाहिये कि उसने वेदान्त के असली तत्व को समझा है। उसी समय गायकों में अग्रगण्य परमात्मा भी बाजे रूपी शरीर और मस्तिष्क को अपने हाथ में लेकर सुन्दर स्वरीली और मधुर राग निकालने लगेंगे और लोग भी कहेंगे कि अमुक व्यक्ति को परमात्मा का आभास हुआ है। वस्तुतः उसमें और कोई नई बात नहीं हुई। वह केवल अपना पराया भूल गया है और काम करने का उसे कुछ ख्याल ही नहीं रह गया। अतः एकाएक अभ्यास में वेदान्त जब परिणित किया जाता है तभी सब सफलतायें मिला करती हैं।

कोई आवश्यकता नहीं कि आप बनों में जाकर वेदान्तिक योग सीखने के लिये निरर्थक तपस्या करें। जिस समय आप काम में डूब जांय उस समय आप अपने को शिव की मूर्ति और योग का दादा समझें। वेदान्त के अनुसार यह शरीर आप का नहीं है। आप भी तो प्रत्यक्ष देखते हैं कि जब आप इस सिद्धान्त की सत्यता को महसूस करते और अविरत

काम के कारण शरीर और मस्तिष्क से कोई संबन्ध नहीं रखते तभी आप को सच्चा आनन्द मिलता है।

काम किसे कहते हैं। इसकी व्याख्या एक दीपक या रोशनी द्वारा की जा सकती है। एक तेल से जलनेवाले लैम्प को हाथ में रखिये। उसमें से चकाचौंध करने वाली चमकती हुई सुन्दर रोशनी निकलेगी। बतलाइये तो सही लैम्प में इतनी चमक कहां से आयी। उत्तर दीजियेगा अविरत काम द्वारा अपनी सत्ता को भूलने के कारण। लैम्प यदि तेल और बत्ती बचाने का प्रयत्न करे तो उसमें स्वयं अंधेरा हो जायगा और असफलता के अतिरिक्त सफलता हाथ नहीं लगेगी। लैम्प को सफलता प्राप्त करना यदि स्वीकार है तो जलना पड़ेगा और तेल बत्ती की चिन्ता छोड़ देनी पड़ेगी। उसी प्रकार यदि आप चाहते हैं कि हमें सफलता मिले, यदि आप चाहते हैं कि हमारी उन्नति हो तो नित्यशः उत्कट परिश्रम करके अपने शरीर पट्ठों और मस्तिष्क को काम की आग में भून डालिये और सोते जागते उठते बैठते केवल काम करने ही की धुन में रहा कीजिये। रोशनी (कान्ति) आप के द्वारा स्वयं निकलेगी। तेल और बत्ती जलाने अथवा दूसरे शब्दों में अंतःकरण से शरीर और मस्तिष्क को भुला देने ही का नाम काम है।

सब सच्चे कामों की सिद्धि तभी होती है जब हम अपने आप को भूल जाते हैं। भारतवर्ष के राजराजेश्वर अकबर आज़म के दरबार में एक बार दो शूरवीर सगे भाई गये और कहने लगे महाराज हमें नौकरी दीजिये। बादशाह ने पूछा आप क्या जानते हैं। उन्होंने कहा हम शूरवीर हैं लड़ना जानते हैं। बादशाह ने कहा अपनी वीरता का परिचय दीजिये।

उन्होंने अपने चमकते हुये भाले निकाल लिये और आमने सामने मुंह करके खड़े हो गये। प्रत्येक ने भाले की तेज़ नोक दूसरे की छाती पर रक्खी और हँसते हुये बड़े आनन्द के साथ एक दूसरे की ओर दौड़ पड़े। भाले शरीर में घुसने लगे, वे न हिले न डुले और न घबड़ाये। उनकी जीवात्मायें जाकर स्वर्ग में मिल गईं और शरीर रक्त पात करते हुये पृथ्वी पर गिर पड़े। सचमुच उन्होंने वीरता का एक बड़ा आश्चर्यजनक सबूत बादशाह को दिया। यह उदाहरण इस बात को सिद्ध करता है कि सच्चे काम की सिद्धि केवल उसी समय होती है जब काम करने वाला अपने शरीर की आहुति कर देता है। शहद की मक्खियाँ अपने जीवन से हाथ धोकर ही डंक मारा करती हैं।

अतः उन्नति और सफलता वेदान्त को कार्य्य रूप में लाने ही से मिला करती हैं। अविरत काम उत्कट परिश्रम सांसारिक मनुष्य के लिये सब से बड़ा योग है। जब तुम समझोगे कि हम काम नहीं कर रहे हैं उसी समय दुनिया के लोग कहेंगे कि तुम बड़े काम करने वाले हो।

किस प्रकार और किस स्थिति में सफलता के साथ काम करने का अभ्यास हमें हो सकता है। काम काम चिल्लाना सहल है परन्तु करना बड़ा कठिन है। हरेक चाहता है कि मैं बड़ा चित्रकार बन जाऊँ; हरेक चाहता है कि मैं सब से अच्छा गाना गाने लगूं। किन्तु हरेक जो चाहता है सो नहीं हो सकता। क्या कारण है कि आप काम से झिझक उठते हैं। क्या कारण है कि आप काम में डट जाते हैं। आपने नहीं देखा कि जब आपने काम करने का विचार किया तो

प्रायः काम नहीं हो सका और जब नहीं किया तो अच्छा हो गया। इससे मालुम होता है कि हमारे ऊपर कोई ऐसी वस्तु अवश्य है जो काम करने की शक्ति को थामे रहती है। जब मनुष्य प्रातः बिस्तरे से उठता है तो उसका मस्तिष्क एक निराले ही ढंग का रहता है। वह क़लम उठा लेता है और धड़ाधड़ कविता और गूढ़ लेख लिखने लगता है। चित्रकार जब सुन्दर चित्र खींचना चाहता है तो परिश्रम करने पर भी नहीं खींच सकता। किसी दिन प्रातः उसमें एक विचित्र शक्ति उत्पन्न हो जाती है और वह सुन्दर चित्र खींचने लगता है। क्यों यही बात है न?

पस हम देखते हैं कि कोई महानशक्ति अवश्य है जो तुम्हारी काम करने वाली शक्तियों को पूर्ण रूप से काम में लगाये रहती है। यदि आप उस शक्ति (चित्तवृत्ति) को प्रतिपादित कर लें तो आप सदैव प्रसन्न रह सकते हैं और आपका किया हुआ काम भी संपूर्ण और सुन्दर हो सक्ता है। वेदान्त बतलाता है कि वह शक्ति अथवा चित्तवृत्ति और कुछ नहीं है। केवल प्रकृति और ईश्वरीय नियमों के साथ चलने, आत्मा में मस्त रहने और स्वार्थ वासना पूर्ण शरीर से विलग रहने ही का दूसरा नाम है। इस प्रकार छिपी हुई आन्तरिक ज्योति या शक्ति की ढूंढ निकालने और उसके उपयोग करने ही से बड़े बड़े आश्चर्यजनक काम हो सकते हैं।

एक चित्रकार जब सड़क पर चलता है तो उसे बहुत सी सूरतें दिखलाई पड़ती हैं। किसी की आँखें और किसी की ठुड्ढी देख कर वह मोहित हो जाता है और उसका चित्र

एकाएक अपने हृदय में खींच लेता है। जब कोई मनुष्य उसके यहां तसवीर खरीदने आता है तो वह उसके बालों को हृदयङ्गम कर लेता है। वह बेचारा तसवीर लेकर चला जाता है और नहीं जानता कि मेरे बालों की तसवीर चित्रकार ने अपने हृदय में खींच ली है। दूसरा आदमी चित्रकार से कोई काम कराने के लिये आता है। वह उसके कानों को हृदय में अंकित कर लेता है। बेचारा आदमी नहीं जानता कि मेरे कानों का चित्र खींच लिया गया है। इस प्रकार चित्रकार का मस्तिष्क आप से आप काम करता रहता है। वह जब दूसरों की आंख, ठुड्ढी, नाक को चुराने लगता है तो उसे यह ख्याल ही नहीं रहता कि मैं चुरा रहा हूं। उसका काम स्वयं होता रहता है। कुछ दिन पश्चात् वह अपने कमरे में बैठ नाक, आंख, ठुड्ढी सब मिलाकर एक सुन्दर चित्र तैयार करता है जो असली को भी मात करता है। इतना अच्छा चित्र क्यों बना ? "मैं यह काम कर रहा हूं" केवल यह भाव और अभिमान को छोड़ने ही से। जिस समय चित्रकार ने घृणा अथवा प्रेम के वशीभूत होकर दूसरी ओर चित्त लगाया उसी समय उसका काम खराब हुआ। आप से आप काम करनेवाली शक्ति क्षीण हुई और उत्साह की जगह आशक्ति अथवा घृणा ने अपना स्थान जमाया। परिणाम यह होगा कि मस्तिष्क अपने वश में न होने के कारण वह भिन्न २ अङ्गों का चित्र न खींच सकेगा, अमली वेदान्त से हाथ धो बैठेगा और चित्र खींचने की शक्ति जहां की तहां हो जायगी।

अतः जितना ही आपका काम आप से आप होता जायगा, जितना ही "मैं कर रहा हूं" इस भाव को आप भूलते

जाइयेगा, जितना ही स्वामित्व की मात्रा आप में कम होती जायगी, जितना ही प्रलोभनों से आप खिंचे रहियेगा, जितना ही इस शरीर से आपका सम्बन्ध कम रहेगा उतनी ही अधिक सफलता आपको उत्तरोत्तर मिलती जायगी। वेदान्त कहता है कि काम कर्त्तव्य समझ कर करो। फल की कुछ भी परवाह न करो, साधनों को एकत्रित करो और केवल काम करना ही अपना लक्ष्य बनाओ। आत्मा को शांत रक्खो और शरीर से बराबर काम किये जाओ। स्वार्थोत्पन्न बेचैनी ही के कारण काम खराब होता है। इस लिये शांति और निर्वाण की इच्छा से ही काम करना अपना ध्येय बनाओ।

सफलता का दूसरा साधन

"निःस्वार्थ आत्मत्याग"

एक बार तालाब और नदी के बीच झगड़ा उठ खड़ा हुआ। तालाब ने नदी से कहा, "नदी, तुम बड़ी मूर्ख हो, अपना पानी और सारा माल असबाब समुद्र को क्यों दे देती हो ? मुझे देखो। मैं तुम्हारे दिये हुये पानी और माल असबाब को उसे नहीं देता। समुद्र बड़ा कृतघ्नी है। उसे किसी बात की आवश्यकता नहीं है। यदि तुम अपनी एकत्रित संपत्ति को समुद्र में डालती चली गई तो भी वह उतना ही खारा रहेगा जितना इस समय है। उसकी कड़ुआहट दूर नहीं होने की। बहिन, भैंस के सामने बीन बाजा बजाना उचित नहीं है।

मेरा कहा मानो और माल असबाब अपने घर रक्खो।"
देखिये यह सांसारिक लोगों की बुद्धिमत्ता है। नदी से कहा
गया कि अन्तिम फल और आगामी आपत्तियों का ध्यान
रक्खो। नदी वैदिक धर्म मानने वाली थी। उसने तालाब की
युक्तिपूर्ण बातों को सुनकर उत्तर दिया, "कि नहीं (मेरे प्यारे
भाई) आपत्तियों और फल से मेरा कोई प्रयोजन नहीं। हार
जीत से मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं। काम मुझे प्यारा है।
अपना कर्तव्य समझ कर करूंगी। मेरा जीवात्मा स्वयंकार्य
की मूर्ति है। इसलिये मैं काम बन्द कभी भी न करूँगी।"
नदी ने अपना काम नहीं छोड़ा, लाखों गैलन पानी समुद्र में
डालती चली गई। कंजूस तालाब तीन चार महीने में सूख
गया, उसमें कीचड़ ही कीचड़ हो गया और उसके गन्दे
पानी से दुर्गन्धि आने लगी किन्तु नदी ज्यों की त्यों साफ़
और कान्तिमय बनी रही। उसका श्रोत नहीं सूखा। धीरे
धीरे पानी समुद्र से उड़ उड़कर चश्मों में जाने लगा। मान-
सून और तिजारती हवाओं ने भी चुपके चुपके अदृश्य रूप से
समुद्र का पानी ले जाकर नदी के उद्गम स्थान को सदा के
लिये जल से तराबोर कर दिया।

वेदान्त कहता है कि आप लोग तालाब की संकुचित
नीति का अनुसरण न करें। मेरा क्या होगा, मेरे काम का
फल मुझे क्या मिलेगा इस बात की चिन्ता स्वार्थी छोटे
तालाब ही को रहती है। आप काम कीजिये किन्तु निष्काम
रूप से। काम करना अपना जीवनोद्देश बनाइये। वेदान्त
की इस शिक्षा पर चलने से आपको दुखदाई वासनाओं
से छुट्टी मिल जायगी। इस बात की कुछ परवाह ही न कीजिये

कि हमारे काम का क्या फल होगा, लोग हमें कुछ देंगे कि नहीं, वे हमारे काम से प्रसन्न होंगे या कड़ी २ आलोचनायें करेंगे। कुछ नहीं तुम्हें तो बेचैन करने वाली वासनाओं से पिंड छोड़ाना है काम से नहीं। सब प्रकार के कष्टप्रद मनोविकार और प्रलोभनों से बचने के लिये काम ही सब से बढ़िया और गुणकारी औषधि है। सच्चा आनन्द उसी समय मिलेगा जब आप सच्चे काम में लग कर इस सूक्ष्म शरीर को भूल जाइयेगा। पवित्र निर्दोषी बनने और परमात्मा तक पहुंचने की यही कुंजी है। इस प्रकार की प्रसन्नता उच्च कोटि की होगी और काम के बदले पुरस्कार रूप में आप को वह अवश्य मिलेगी। हृदय को स्वार्थ पूर्ण कामों में लगाकर इस स्वर्गीय अनुपम आनन्द को नष्ट न करो। कुत्सित इच्छाओं और द्रव्य के प्रलोभनों से आप की बढ़ती होने की अपेक्षा घटती ही होती जायगी और आप के परिश्रम को सिवाय हानि पंहुंचने के लाभ नहीं पहुंचेगा। काम समाप्त होने के पश्चात् जो आनन्द मिलता है वैसा सुन्दर और अनुपम आनन्द तो और किसी प्रतिफल के मिलने से और न अपनी प्रशंसा सुनने से ही मिल सकता है। अतः काम को त्याग और धर्म की दृष्टि से करो। व्यर्थ उसके तुच्छफल की ओर घसिट कर न चले जाओ। ज़िम्मेदारी की परवाह न करो। प्रतिफल पाने की इच्छा छोड़ ही दो। यही अपना लक्ष्य बनाओ। लोग कहते हैं, "पहिले योग्य बनो फिर इच्छा करो" वेदान्त कहता है, "केवल योग्य बनो इच्छा करने की कोई आवश्यकता नहीं।" जो पत्थर दीवार में लगाये जाने योग्य हैं वह रस्ते में पड़ा हुआ कभी नहीं मिल सकता। यदि

तुम परमात्मा के अटल नियम द्वारा अपने में योग्यता उत्पन्न करो तो प्रत्येक वस्तु आप से आप दौड़ी चली आवेगी जलता हुआ लैंप पांखियों को बुलाने नहीं जाता, पांखियां स्वयं लैंप के चारों ओर इकट्ठी होती हैं। साफ़ पानी का सोता मनुष्यों की कुछ भी परवाह नहीं करता किन्तु वे स्वयं उसके पास जाकर पीते हैं। चन्द्रमा के उदय होते ही लोग चाँदनी का आनन्द आप से आप लेने लगते हैं, चन्द्रमा को कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती। काम पर डटे रहो जब तक कि आप को शरीर की अनित्यता और आत्मा की महानता का ज्ञान न हो जाय। इस प्रकार कठिन परिश्रम करने का अभ्यास जब पड़ जायगा वो निर्वाण और कैवल्य के आनन्द का अनुभव आप स्वयं करने लगेंगे। परिश्रम की शूली पर शरीर को लटका दोगे तो सफलता आप से आप पीछे पीछे दौड़ी चली आवेगी और प्रशंसा करनेवालों की कमी न रहेगी। ईसा मसीह जब तक जीवित था तब तक उसका सत्कार नहीं हुआ। जब शूली पर लटका दिया गया तो उसकी पूजा होने लगी। पृथ्वी के भीतर गड़ी हुई सचाई एक न एक दिन अवश्य निकलती है। बीज जब तक सड़े नहीं और न उसके रूप में परिवर्तन हो तब तक न तो वह उगही सकता है और न उसमें दाने ही लग सकते हैं। अतः सफलता का दूसरा साधन 'आत्म त्याग' है। सूक्ष्म शरीर का बलिदान करना ही वास्तविक त्याग है। त्याग का दूसरा अर्थ कहीं और कुछ न समझ बैठना। त्याग का अर्थ बैराग नहीं है।

प्रत्येक पुरुष सफ़ेद (गोरा) और कान्तिमय होना चाहता है। प्रत्येक पुरुष यशस्वी होना चाहता है। सफ़ेद पदार्थ की तरफ़ देखो। वे सफ़ेद क्यों हैं; इनमें सफेदी कहां से आई। विज्ञान बतलावेगा कि सफेदी का और कोई दूसरा कारण नहीं है, केवल त्याग है। सूर्य्य के सात रंग सब पदार्थों पर पड़ते हैं। कुछ पदार्थ सब रंग सब सोख लेते हैं केवल एक रंग बाहर फेंकते हैं। ऐसे पदार्थों की पहिचान उसी रग से होती है। तुम गुलाब को गुलाबी रंग कह सकते हो। किन्तु वह रङ्ग गुलाब का नहीं है। कैसे अचम्भे की बात है कि जो रङ्ग उसने सोख लिया है उसका कुछ हिसाब ही नहीं लगाया जाता। काले पदार्थ सूर्य्य से रङ्ग खींच कर सोख लेते हैं। बाहर कोई रङ्ग नहीं फेंकते। इनमें त्याग की मात्रा नहीं है। यही कारण है कि वे काले देख पड़ते हैं। सफ़ेद पदार्थ सब रङ्ग त्याग देते हैं कोई रंग नहीं सोखते। वे कहते हैं हमारी कोई वस्तु नहीं है, हम किसी पर स्वार्थ पूर्ण अधिकार नहीं करना चाहते। इनमें स्वामित्व का भाव नहीं है। इसी लिये वे सफेद और कान्तिमय बने रहते हैं।

इसी प्रकार यदि आप उन्नति करना चाहते हैं, यदि आप की इच्छा है कि हमारी कीर्त्ति फैले तो आप को स्वामित्व का भाव हृदय से निकाल कर फेंक देना पड़ेगा। ऐसा करने की आवश्यकता है। दान दीजिये, स्वतंत्रता पूर्वक काम कीजिये किन्तु अपना हाथ किसी के सामने गिड़गिड़ा कर न फैला-इये। प्रत्येक वस्तु को अपनी बनाने की आदत छोड़िये। हवा सब की समान संपत्ति है। तब जो हवा आप के फेफड़ों में है उसे आप अपनी क्यों बनाते हैं। जब आप का ध्यान

फेफड़े वाली हवा से हट जाता है तो आप कहने लगते हैं अहा यह सारा वायु मंडल हमारा है, हमारे सामने हवा का ढेर का ढेर लगा हुआ है, इसी को सांस लेने के काम में लाना चाहिये। इसलिये घमंड में चूर होकर स्वप्न में भी न ख्याल करो कि यह वस्तु हमारी है। प्रत्येक वस्तु बस ईश्वर की है। जगदात्मा की है। सर आइज़क न्यूटन का उदाहरण लीजिये। क्या बात है कि जनता उसको इतना बुद्धिमान और यशस्वी समझती है। जिस समय वह मृत्युशय्या पर लेटा हुआ था उस समय उसके भावों का पता चला। लोगों ने उसकी प्रशंसा की और कहा कि आप दुनियां में सब से बड़े हैं। उसने उत्तर दिया नहीं! मेरी बुद्धि तो एक बालक की तरह ज्ञान के विस्तीर्ण समुद्र के किनारे कंकड़ के रोड़े बिन रही था। न्यूटन अभी तक रोड़े बिनता हुआ बिछौने पर लेटा हुआ था। अतः हम देखते हैं कि वही मनुष्य तन मय होकर सारी शक्तियों के साथ काम कर सक्ता है जिसमें घमंड की मात्रा नहीं है और जो अपनी बड़ाई के लिये नहीं मरता। वेदान्त का यही सार है।

तुम्हारे मन में बहुत सी इच्छायें भरी हैं। मैं तुम्हें बतलाता हूं कि उनकी पूर्ति किस प्रकार हो सकती है। आपने कमरे के किसी रोशनदान के पल्ले (छोटी खिड़की) को देखा है? यदि देखा है तो बतलाइये उसकी साया ऊपर किस प्रकार उठाई जा सकती है। पल्ले को डोरी द्वारा नीचे खींच लीजिये। साया ऊपर आप से आप उठ जायगी। उसी प्रकार जब इच्छाओं से आप मुख मोड़ लेंगे तभी उनकी पूर्ति स्वयं हो जायगी। धनुष को आप चाहें जितना फैलाइये बाण अपना

स्थान नहीं छोड़ेगा। जब आप बाण को छोड़ देंगे तभी वह शत्रु के हृदय को बींधेगा उसी प्रकार जब आप इच्छाओं से हाथ खींच लेंगे तभी वे दूसरों के हृदय में टक्कर मारेंगी और तभी उनकी पूर्ति होगी। वेदान्त पुकार पुकार कर कहता है कि आप अपना पराया छोड़कर परमात्मा के रङ्ग में रङ्ग जाइये, सफलता आप को आप से मिल जायगी।

दो सन्यासी साथ २ यात्रा कर रहे थे। उनमें से एक तो सदैव अपने पास द्रव्य रखता था और दूसरा त्यागी था। उन्होंने वाद-विवाद करना प्रारम्भ किया कि मनुष्य को द्रव्य रखना चाहिये या नहीं। होते हवाते वे एक नदी के किनारे पहुंचे। सायंकाल हो गई थी। त्यागी मनुष्य के पास एक टका भी न था किन्तु दूसरे के पास बहुत से रुपये थे। त्यागी ने कहा, "हम शरीर की कुछ भी परवाह नहीं करते; यदि हमारे पास पैसे नहीं हैं तो क्या, हम ईश्वर का गुणानुवाद करके इसी किनारे पर रात को बिता सकते हैं।" पैसे वाले सन्यासी ने उत्तर दिया, "भाई, यहां न तो कोई गांव है, न झोपड़ा है, न कोई मनुष्य है, सांप डस लेंगे अथवा ठंड से ठिठुड़ जायगे मेरे पास पैसे हैं चलो मल्लाह को कुछ दे दिवाकर उस पार गांव में चले चलें, वहां रात बड़े आराम से कटेगी"। अंततः वे नाव में बैठकर उस पार चले गये। रात्रि के समय पैसे वाले सन्यासी ने त्यागी सन्यासी को बहुत खोटी खरी सुना कर कहा "क्यों' अब तुम्हें द्रव्य के लाभ मालूम हुये; देखो पैसे होने से दोनों की जान बच गई। यदि मैं तुम्हारी तरह त्याग ही का अवलंब लेता तो या तो हम लोग भूखों मरते, ठिठुर जाते अथवा मर जाते।" त्यागी ने कहा, "भाई।

त्याग ही से तो इस पार सुरक्षित पहुंचे। यदि पैसे जेब में भरे रहते और मल्लाह को न देते तो उसी पार पड़े रहते। इसके सिवाय तुम्हारे पाकट को मैं अपना पाकट समझता था। मैं ने सोचा कि मेरे पास पैसे हैं न मेरे पाकट में सही आपही के पाकट में सही। ऐसे २ विचारों से मुझे पैसों का कष्ट नहीं होता। जब किसी बात की आवश्यकता होती है तो वह आप से आप मिल जाया करती है।" इस कहानी से इस बात की शिक्षा मिलती है कि जब तक आप अपनी इच्छाओं को अपने साथ रक्खेंगे तब तक न तो आपकी कुशल है और न आप को शांति ही मिल सकती है। इच्छाओं को छोड़ दो, आप को दुगनी शांति मिलेगी सुख मिलेगा और आप के इच्छाओं की भी पूर्ति हो जायगी। स्मरण रहे आप की इच्छायें तभी पूर्ण होंगी जब आप उनसे हाथ खींचकर अपना ध्यान ब्रह्मचिन्तन में लगायेंगे। इस प्रकार ज्ञात अथवा अज्ञात रूप से जिस समय आप परमात्मा में निमग्न हो जांयगे उस समय आप के इच्छाओं की पूर्ति में कुछ भी देर न लगेगी।

सफलता का तीसरा साधन

"प्रेम"

सज्जनो! सफलता का तीसरा साधन प्रेम है।

प्रेम का क्या अर्थ है। पड़ोसियों, रिश्तेदारों और अपने में एक ही ब्रह्म समझ कर सृष्टि मात्र को समान दृष्टि से देखने ही का नाम प्रेम है। यदि आप दूकानदार

हैं तो जब तक आप अपने और ग्राहकों के स्वार्थ (लाभ) को समान दृष्टि से नहीं देखेंगे तब तक आप की बढ़ती न होगी उलटे हानि हो जायगी। यह हाथ स्वार्थवश होकर अपने को शरीर के और अंगों से भिन्न समझे और कहे 'कि पसीना बहाकर कमाता तो मैं हूं सब शरीर को हिस्सा क्यों दूं। क्या मैं कष्ट से उत्पन्न की हुई सारी कमाई पेट को देदूं जिसमें पेट सारे अंगों को देदे। नहीं मैं ऐसा नहीं करूंगा। सब मैं अपने ही लिये रक्खूंगा।" तो उस समय हाथ के लिये केवल यही एक साधन है वह अपने अंदर छेद करके खाने के पदार्थ भर ले। क्या इससे हाथ को कोई लाभ हो सकेगा? क्या हाथ को अपने उद्देश्य में सफलता मिल सकेगी? कभी नहीं। हां एक प्रकार से हाथ को लाभ पहुंच सकता है ; हां एक प्रकार से दूसरे अंगों की कुछ परवाह न करता हुआ हाथ अपनी उन्नति कर सकता है। बर अथवा शहद की मक्खियां या इसी प्रकार के दूसरे विषैले जन्तुओं को पकड़कर अपने को कटा ले तो वह बड़ा मोटा हो जायगा। केवल यही एक साधन है जिसके द्वारा हाथ के स्वार्थ और स्वार्थ पूर्ण दलीलों की पूर्ति हो सकती है। किन्तु ऐसा करना हम नहीं चाहते। हमें ऐसी प्रसन्नता और ऐसी सफलता की इच्छा नहीं होती। यह तो रोग है।

उसी प्रकार स्मरण रहे कि संसार शरीर है। तुम्हारी देह, हाथ, अंगुली और नाखून की तरह उसका एक अंग है। सफलता प्राप्त करने के लिये उचित है कि तुम अपने शरीर को संसार के दूसरे लोगों के शरीर से भिन्न न समझो। यदि हाथ को उन्नति करनी है तो उसे चाहिये कि वह अपने और दूसरे अंगों

के लाभ को एक समान समझे। दूसरे शब्दों में हाथ को सोचना चाहिये कि जीव केवल कलाई ही में नहीं है बल्कि सारे शरीर भर में व्याप्त है। सम्पूर्ण शरीर को खिलाने और हाथ के खिलाने में कोई अन्तर नहीं है। जब तक तुम इस सचाई को न समझो; जब तक तुम्हें इस बात का अनुभव न हो कि हम में और संसार के अन्य प्राणधारियों में कोई अंतर नहीं है, जब तक तुम्हें यह न मालुम हो कि हम और परमात्मा एक ही हैं तब तक तुम्हें सफलता नहीं मिल सक्ती। जब तुम एक दूसरे में भिन्नता समझने लगते हो तभी तो तुम्हारा आनन्द नष्ट हो जाता है और तम्हें दुख मिलता है। पूर्ण ज्ञानी तुम उसी समय कहे जा सकते हो जब अपने को और सारे संसार को समान समझो। यदि इस एकता का ज्ञान तुम मे है तो एक प्रकार से तुम अपना जीवन वेदान्त के सांचे में ढाल रहे हो। जहां तुम इस सचाई के विरुद्ध चले; जहां तुमने इस पवित्र नियम का उल्लंघन किया वहीं स्वार्थी हाथ की तरह किये हुये पापों का दुख तुम्हें मिला। कालरिज ने "ऐन्शंट मेरीनर" (Ancient Mariner) नामक पुस्तक में इस सचाई की व्याख्या भले प्रकार की है। बैरन ने भी प्रिज़नर आफ् चिलन (Prisoner of Chillan) नामक पुस्तक में खूब कहा है। इन कवियों ने यह सिद्ध किया है कि जहां मनुष्य निसर्गदेव के विरुद्ध चला उसी समय उसे दुख हुआ और जहां उसने अन्य मनुष्यों को अपने समान समझा वहां उसे सुख मिला।

सार्थक उसी की भाइयो है ईश की भी प्रार्थना।
जो मनुज और पशु पक्षि पर भी प्रेम करता है घना॥

छोटे बड़े सब पर जिसे मन से सदाही प्यार है।
उस पुरुष की हो प्रार्थना में जान लो कुछ सार है॥

एक राजा किसी जङ्गल में आखेट को गया। शिकार की दौड़ धूप में उसके साथियों से उस का विछोह हो गया। जाज्वल्यमान सूरज की तपती हुई किरणों के कारण उसे बड़ी प्यास लगी। पास ही एक छोटा सा बाग़ देख वह उसी में चला गया। राजा इस समय शिकारी के भेष में थे। बेचारे माली ने उन्हें पहिले कभी नहीं देखा था इस कारण वह राजा को न पहिचान सका। राजा ने कहा मैं बहुत प्यासा हूं, पानीके लिये जो कुछ तुम्हारे पास हो ले आओ। माली सीधे बाग़ में चला गया, कुछ अनार तोड़े और दानों का शरबत एक कटोरे में निचोड़ कर राजा के सामने ले आया। राजा ने उसे पी लिया किन्तु उसकी प्रचंड प्यास केवल इतने ही से न बुझी। उसने माली से कहा, "भाई अनार का शरबत और ले आओ"। माली लेने के लिये चला गया। उसके जाने पर राजा ने मन में विचार किया, कि "इस बाग़ में बड़े फल फूल दिखलाई देते हैं; माली आधे मिनट में शरबत अनार तैय्यार करके आता है इसलिये इस बाग़ के मालिक पर एक भारी कर लगा देना चाहिये।" उधर माली ने देर करना प्रारंभ किया एक घंटा हो गया तब भी नहीं लौटा। राजा आश्चर्य करने लगा कि क्या बात है; जब पहिले पहिल मैंने उससे शरबत मांगा था तो वह एक मिनट के भीतर तैय्यार करके ले आया था। इस बार एक घंटा हो गया उसका प्याला अभी तक न भरा। एक घंटे के पश्चात् माली प्याला लेकर लौटा मगर वह लबालब नहीं भरा थी। राजा ने उससे पूछा क्या

कारण है कि पहिले प्याला भरा हुआ था और इस बार ख़ाली है। चतुर माली ने उत्तर दिया, "जब मैं पहिले शरबत के प्याले को लेने गया था तो राजा की नियत अच्छी थी और जब मैं दूसरा प्याला लेने के लिये गया तो उसका कृपालु और उदार स्वभाव अवश्य बदल गया होगा। अनारों में एकाएक परिवर्तन होने का दूसरा कारण मैं नहीं बतला सकता।" राजा ने मन ही मन में कहा कि हां बात तो यही है, यह ठीक कहता है। जब पहिले पहिल राजा ने बाग़ में पदार्पण किया था तो उसकी नियत अच्छी थी। वहां के लोगों के प्रति उसके हृदय में प्रेम था। वह सोचता था कि यहां के लोग बड़े ग़रीब हैं, इनको सहायता की आवश्यकता है। जब माली अनार का शरबत ले आया तो उसकी नियत डोल गई और उसके विचार बदल गये। चूंकि राजा ने निसर्ग देव के विरुद्ध काम किया इसीलिये बाग़ के अनारों में परिवर्तन आ गया। ज्योंही राजा ने प्रेम के नियम का उल्लंघन किया त्योंही वृक्षों ने भी उसको रस देने से हाथ खींच लिया।

कहानी चाहे सच्ची हो अथवा झूठी, हमें इससे कुछ मतलब नहीं। हां इस बात को कोई अस्वीकार करही नहीं सकता कि जब तक तुम निसर्ग देव के साथ २ चल रहे हो; जब तक तुम अपने को और सारे संसार को एक समझते हो, उस समय तक सारी व्यवस्थायें यहां तक हवा और पानी तुम्हारी ओर रहेंगे। और ज्योंही तुम ने बिगाड़ शुरू किया त्योंही तुम्हारे मित्र और सम्बन्धी तुम से फिरे और सारा संसार तुम्हारे विरुद्ध हुआ। प्रेम के दैवी नियम को समझो

और उसे कार्य्य रूप में परिणित करने का प्रयत्न करें। प्रेम सफलता का एक बड़ा महत्वपूर्ण साधन है।

सफलता का चौथा साधन

"मन की प्रसन्नता"

सफलता का चौथा साधन मन की प्रसन्नता प्राप्त करना है। चिरस्थायी प्रसन्नता किस प्रकार मिल सकती है। "प्रसन्न रहो, शांत रहो" यह कहना सरल है किन्तु हर हालतों में प्रसन्न और शांत रहना कितना कठिन है। केवल नियम बना कर प्रसन्नता नहीं मिलने की। कोरे नियमों से काम नहीं चलने का। तो भला फिर हमें प्रसन्नता क्योंकर मिल सकती है। बतलाइये तो सही कि कौनसी ऐसी बात है जो हमारी वृत्तियों को खींचे हुए है। वेदान्त बतलाता है कि हम उदासीन और अप्रसन्न उस समय होते हैं जब हम शरीर को सब कुछ समझने लगते हैं और इच्छाओं के वशीभूत होते हैं। उसी समय हमारा मन डँवाडोल होने लगता है। मरोड़ उत्पन्न होने से हमें मेदे का ज्ञान होता है, सरदी होने से नाक का ज्ञान होता है, दर्द होने से भुजाओं का ज्ञान होता है उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान का ह्रास होने से इस शरीर का ज्ञान होता है। शरीर की ख़बरदारी करने और चिन्ताओं में डूबे रहने हीके कारण आध्यात्मिक बीमारी पैदा होती है, शारीरिक निर्बलता के कारण स्वर्ग से गिरना पड़ता है,

भेद भाव का ज्ञान होते ही हम स्वर्ग से फेंक दिये जाते हैं किन्तु हाड़ मांस के शरीर को सूली पर चढ़ाकर हम स्वर्ग फिर प्राप्त कर सकते हैं। शरीर और कुत्सित, तुच्छ निःसार वस्तुओं की कुछ परवाह न करने ही से हमारी बुद्धि शम हो सकती है और बुद्धि के शम होने से हमें मन को प्रसन्नता मिल सकती है।

मन की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये वेदान्त की यह शिक्षा कार्य्यरूप में परिणित करके दिखलानी होगी कि हमारा आत्मा ही एक सारभूत पदार्थ है। आत्मा का सच्चा ज्ञान जब इस प्रकार आपको हो जायगा तो संसार की सब व्यवस्थायें आप के अनुकूल हो जायंगी।

भाइयो! हम से और इस शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं है। ये शरीर के अंग और बाहरी रिश्तेदारियां केवल खिलौने और थेटर के खेल हैं। (प्रायः हम कहा करते हैं कि अमुक मनुष्य मेरा शत्रु है, अमुक मेरा मित्र है, अमुक मेरा पिता है और अमुक मेरा पुत्र है किन्तु वास्तव में न तो मेरा कोई शत्रु है और न मित्र है। मैं तो साक्षात परब्रह्म परमेश्वर हूं। मुझ से और सांसारिक झगड़ों से कोई सम्बन्ध नहीं है सब रिश्तेदारियां केवल दिखावटी हैं। प्रत्येक खिलाड़ी का कर्तव्य है कि नाटक में वह अपना खेल (part) निरासक्ति के साथ भली भांति करे। जो नाट्य सम्बन्धी प्रेम और घृणा की बातों को हृदयङ्गम कर लेता है वह मूर्ख है। जब संसार नाट्यशाला है तो दिखावटी कर्तव्यों की परवाह क्यों करते हो; यदि कोई राजा है तो उससे डाह क्यों करते हो; और यदि कोई दरिद्र है तो उससे घृणा क्यों करते हो।

स्थिति पर किसी का मान और अपमान निर्भर है नहीं।
कर्तव्य पालन कीजिये फिर नाम होगा आपही।

वेदान्त बतलाया है कि हमें अपनी वर्तमान अवस्था की कुछ चिन्ता ही नहीं करनी चाहिये। केवल मूल सिद्धान्त को समझकर भय को दिल से निकाल देना चाहिये। न्यायाधीश का उदाहरण लीजिये। न्यायाधीश आकर अपने स्थान पर डट जाता है। फरीक, क्लर्क्स, वकील और नौकर चाकर उसकी प्रतीक्षा करते रहते हैं। उसे गवाहों, वकीलों और वादी प्रतिवादियों को बुलाने नहीं जाना पड़ता। उसे कमरा मेज़ और कुरसी नहीं झाड़ने पड़ते। उसके केवल रौब ही से सब बातें दुरुस्त हो जाती हैं। सूर्य भगवान् के निकलते ही नदी पौधे, पशु पक्षी यहां तक कि सारी प्रकृति देवी सचेत हो जाती है उसी प्रकार जब आप सत्य का अवलम्बन लेंगे; जब आप निःस्वार्थ जज के स्थान में बैठेंगे तभी आपकी महान आत्मा से कांति निकलेगी और सब बाह्य पदार्थ उसे देखकर आप से आप आपके पास दौड़े आवेंगे। भारतवर्ष के सब से बड़े योद्धा महाराज रामचन्द्र के विषय में यह लोकोक्ति है कि जब वे सीता जी को लाने के लिये लंकापुरी को रवाना हुये तो प्रकृति देवी राम जी की सहायता करने के लिए उद्यत हुई बंदर, हंस, गिलहरी, पत्थर, हवा, पानी लिस्ट में अपना नाम लिखाने के लिये एक दूसरे की स्पर्धा करने लगे। अपने आत्मा में मस्त रहो और पतित करने वाले प्रलोभन और वैमनस्य को छोड़ दो क्या बात है कि फिर देवता सेवकों की तरह आपकी सेवा न करने लगें। छोटे बच्चे को सब क्यों प्यार करते हैं। वह पहलवान से पहलवान मनुष्य के कंधे

पर क्यों चढ़ जाता है और बड़े से बड़े आदमी के बालों को पकड़ कर क्यों खसोट लेता है क्या बात है कि वे बुरा नहीं मानते। कारण यही है कि बच्चे को बाह्य बातों का ध्यान नहीं रहता वह सदैव अचेतन रूप से ब्रह्म में लीन रहता है।

यदि आप सचाई के साथ काम करते हुए अपने कर्तव्य का पालन किये जाइये तो आपको बाहरी सहायता प्राप्त करने के लिये कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। यदि वक्ता का व्याख्यान अच्छा है तो लोग उसकी अच्छी २ बातों को स्वयं आकर नोट कर लेंगे उन्हें बुलाने की आवश्यकता न पड़ेगी। न्यायाधीश की तरह जमकर बैठ जाइये। अपनी आत्मा पर विश्वास रखिये। दूसरे से किसी बात की इच्छा कर के और वृथा की शंकाओं से अपने हृदय को भर कर मन की प्रसन्नता नष्ट न कीजिये।

शरीर के किसी अंग में जब खुजलाहट उत्पन्न होती है तो खुजलाने के लिये हाथ आप से आप वहां पहुंच जाता है। जीवात्मा की जो शक्ति हाथ में है वही शक्ति खुजलाहट के स्थान पर भी है। जैसी आत्मा आप में है वैसी ही आप के पड़ोसियों में भी है जब आप ने सर्वगुण सम्पन्न परमात्मा पर ध्यान लगाकर सारे संसार को अपना शरीर बना लिया तो खुजलाहट की जगह पर हाथ की तरह बाहरी सहायता आपके पास स्वयं पहुंची रहेगी।

जब हम अपनी परछाईं पकड़ने के लिये उसके पीछे दौड़ते हैं तो वह हम से आगे भागती जाती है। हम उसे नहीं पकड़ सकते। किंतु यदि हम उसकी ओर से चित्त हटाकर

सूर्य की ओर मुंह करके दौड़ें तो वह आपके पीछे लग जायगी। इसी प्रकार जब आप बाह्य पदार्थों के लिये हाथ फैलायेंगे तो वे आप के सामने से भाग निकलेंगे और जिस समय आप उनकी ओर मुंह फेर कर जाजल्यमान अपनी आत्मा पर ध्यान लगायेंगे तो वे आप के पीछे २ दौड़ेंगे।

बहुत से लोग "कर्तव्य" शब्द का नाम सुनकर डर जाते हैं और मारे डर के उनके हाथ पैर ढीले पड़ जाते हैं। ड्यूटी कर्तव्य जून् की तरह उन पर सवार रहती और परेशान करती है। उनका शरीर सदा अशांत बना रहता है। कर्तव्य के पीछे मशीन की तरह काम करने वाले ये गुलाम जितनी ही जल्दी करते हैं उतनी ही अपनी शक्ति को नष्ट करते हैं। (कहा मानो और) ऐसा अभ्यास डालो कि ड्यूटी (कर्तव्य) के कारण न तो आप की बुद्धि चंचल होने पावे और न उत्साह ही भंग हो। कर्तव्य को तो आप ही ने निश्चित किया है क्योंकि तुम अपने आप के स्वामी हो। काम करने के लिये अपने अफ़सर तुमने स्वयं बनाये और वर्तमान पद तुम्हीं ने स्वयं स्वीकर किया। यदि तुम्हें रुपये की आवश्यकता है तो तुम्हारे अफ़सरों को काम की आवश्यकता है। बराबरी का हिसाब है। तुम अपनी इच्छा के अनुसार काम करते हो किसी दूसरे की इच्छा के अनुसार नहीं करते। अपनी वर्तमान स्थिति आपने स्वयं बनाई है और भविष्य भी आप ही स्वयं बनावेंगे। अपने भले बुरे के कर्ता तुम्ही हो इसलिये प्रसन्नचित्त बनो।

होनहारता हम निज बनाते हैं विचारों से सदा।
जानते पर कुछ नहीं अच्छा बुरा है क्या बदा॥

छाया विचारों की लखो कहते जिसे प्रारब्ध है।
कामना जैसी जिसे उसको वही उपलब्ध है॥
सब विचारों का प्रभू है मन यदपि वह भिन्न है।
शांति दृढ़ गम्भीर होना ही विजय का चिन्ह है॥
छोड़कर भय को किसी शत्रु से हमको भय नहीं।
त्याग दें यदि मोह माया तो हमें जय सब कहीं॥
आपत्ति तब आघेरती है ईश कहता है यही।
चाहते यदि कामना की पूर्ति तो यह भी सही॥

काम में सड़क के मज़दूर की तरह न लगो। बादशाहों की तरह डट जाओ ताकि तुम्हें उसमें उतना ही आनन्द मिले जितना आनन्द किसी खेल खेलने में मिलता है। मुर्दादिल होकर काम करने मत बैठो। अपने आप में डूब जाओ और समझे रहो कि बादशाह हमारे नौकर हैं। आकाश मंडल में चमकते हुये तारों की तरह काम करो।

अति निडर होकर वे सदा सब वस्तुओं को देखते।
सुख प्रेम अपने मे रहित वे अन्य का नहिं लेखते॥
बस प्रेम का तो मूल्य बुध जन प्रेम ही हैं मानते।
नव फूल खिलने का मज़ा है पक्षिगण ही जानते॥

काम की ज़िम्मेदारी और फल की आशा हृदय तल से बिलकुल निकाल ही दो। अपने अफ़्सरों को अपनी आत्मा से बढ़कर न समझो। तुम्हारा जीवात्मा ही बड़ा अफ़सर है। ख़बरदार कर्तव्य के ख्याल और अफ़सरों के भय से तुम्हारी शक्ति का ह्रास न होने पावे। अफ़सरों के आज्ञानुसार किया हुआ काम बनावटी और अपने इच्छानुकूल किया हुआ काम सारभूत होता है।

सफलता का पांचवां साधन

"निर्भयता"

अब हम सफलता की पांचवीं कुंजी निर्भयता की ओर आते हैं। निर्भयता किसे कहते हैं। माया के परदे को फाड़ कर सच्ची आत्मा को साक्षात् करने और उसी में विश्वास रखने का नाम निर्भयता है। भय उसी समय तक है जब तक हमें शरीर का ज्ञान है। इस शरीर में चिन्तायें भरी हैं। इसे कीड़े खा सकते हैं और इस में सब प्रकार के दुखों का समावेश हो सक्ता है। जिस समय हमने शरीर की चिन्ता छोड़ी उसी समय हम निर्भय हुये। अपने को परमात्मा का रूप समझकर वेदान्त की शिक्षा के अनुसार जीवन व्यतीत करो। आप का कोई बाल भी बाका नहीं कर सक्ता। निर्भयता और वेदान्त जुदे जुदे नहीं है।

सफलता के लिये निर्भयता की कितनी आवश्यकता है इसे अपने अनुभूत एक उदाहरण से मैं सिद्ध करूंगा। हिमालय पहाड़ पर राम से और रीछों से भेंट हो गई किन्तु उन्होंने राम को तंग नहीं किया। क्यों? केवल निर्भयता के कारण। उस समय राम के हृदय में यह भाव भर गया कि मैं शरीर नहीं हूं, मस्तिष्क नहीं हूं, मैं साक्षात् परब्रह्म हूं। मुझे आग नहीं जला सकती और न कोई हथियार काट सकता है। मैंने उनकी ओर आंख फाड़ कर देखा और वे सब के सब भग गये। इसी प्रकार एक भेड़िये और चीते से भेंट हो गई किन्तु मेरे आंख फाड़कर देखते ही वे भाग गये। जब विपत्ति आती है

तो कबूतर आंखें बंद कर लेते हैं। वे बिल्ली को न देखकर समझते हैं कि बिल्ली हमें नहीं देखती परन्तु बिल्ली उन्हें खा जाती है। इसी प्रकार यदि तुम डरोगे तो बिल्ली तुम्हें खा जायगी। शहर के एक महल्ले से दूसरे महल्ले को जाते हुये डरने पर कुत्ते भी भूंकते हैं और कभी २ काट खाते हैं प्रत्युत निर्भय होने पर सिंह और चीते भी पाले जा सकते हैं। एक बरतन से दूसरे बरतन में द्रव वस्तु उड़ेलते समय यदि हाथ किंचित् भी हिला तो छलक जायगी। इसको साधकर एक दम निर्भयता पूर्वक डालो, एक बूंद भी न गिरेगा।

शङ्का और डर ही के कारण आपकी ऐसी शोचनीय दशा होती है। किसी बात को सुनकर घबड़ाहट से चौंक न पड़ो; तुम में बड़ी शक्ति है। भय उत्पन्न करने वाले शरीर की माया मोह छोड़ दो। चिमनी के फूटने, चूहे के चलने, पत्ती के खड़कने अथवा किसी की परछाईं के देखने से तुम्हारा १५० पौंड मिट्टी का शरीर क्यों कांप उठता है। क्या यह एक शोक की बात नहीं है। भय से बढ़कर कोई दूसरी आपत्ति बुरी नहीं है। यदि मुझसे पूछिये तो मैं भय से अपने को परेशान करने की अपेक्षा मर जाना पसंद करूंगा।

किसी ने कहा है "कि जिसके हृदय में गुलाब पाने का ख्याल ही नहीं उत्पन्न हुआ उसे गुलाब नहीं मिला।" यदि तुम दूसरों से घृणा करोगे तो दूसरे भी तुमसे घृणा करेंगे। यदि तुम खुफिया और दुष्टों से डरोगे तो वे तुम्हें और अधिक संख्या में मिलेंगे। यदि तुम स्वार्थी और कपटी पुरुष से डरोगे तो चारों ओर स्वार्थी और कपटी ही कपटी दिखलाई

पड़ेंगे। इसलिये डरो नहीं। पवित्र बनो। कोई अपवित्र वस्तु तुम्हारे मार्ग में नहीं आवेगी। सांसारिक सफलता और आध्यात्मिक सफलता साथ २ जाना चाहिये। धोखा वे खाते हैं जो एक को दूसरे से अलग करने की चेष्टा करते हैं।

चोर घर में तभी घुसते हैं जब वह सुरक्षित नहीं रहता। यदि उसमें सदा दीपक जलता रहे तो उनकी हिम्मत न पड़ेगी। उसी प्रकार अपने हृदय में सचाई की रोशनी हमेशा जलाये रक्खो। क्या बात कि भय अथवा प्रलोभन का शैतान फिर घुस तो जाय! परमात्मा के नियम पर विश्वास रक्खो। सांसारिक बुद्धिमता के पीछे पड़कर जीवन को दुखमय न बनाओ।

वृथा टंटे बखेड़ों में पड़कर अपने चित्त को मलीन क्यों करते हो। क्या तुम सूर्यों के सूर्य नहीं हो? कौन सी विपत्ति है जिससे तुम अपना पिंड नहीं छुड़ा सकते। भयभीत करने वाली परिस्थितियों को सत्य मानना बड़ी भूल है। तुम्हारा तो स्वभाव ही परमात्मा ने निर्भीक बनाया है।

सफलता का छठवाँ साधन

आत्मविश्वास (Self reliance)

सफलता का छटवां साधन आत्मविश्वास है। हाथी का डील डौल सिंह से कहीं बड़ा होता है किन्तु एक सिंह उनके सारे गोल को भगा सक्ता है। इस रहस्य का क्या कारण

है। बात केवल यही है कि सिंह एक सच्चा वेदान्ती है। हाथी शरीर को सब कुछ मानता है। इसके विरुद्ध सिंह अपनी आत्मा पर विशेष ध्यान रखता है। यद्यपि सिंह का शरीर छोटा है किन्तु वह अपने को हाथी से अधिक बली समझता है। हाथी बड़े डरपोक होते हैं। उन्हें डर लगा रहता है कि हमारा शत्रु हम पर हमला कर कहीं हमें खा न जाय। यही कारण है कि वे चालीस, पचास, सौ, दो सौ के झुंड में रहते हैं और जब सोने लगते हैं तो एक मज़बूत हाथी को अपना पहरेदार नियत कर लेते हैं। वे नहीं जानते कि हम में से एक २ हज़ारों सिंहों को मार सक्ता है। उन्हें अपनी आत्मा पर विश्वास नहीं है। इसीलिये उनमें साहस की कमी रहती है।

अतः हम देखते हैं कि आत्मविश्वास सफलता का एक मुख्य साधन है। वेदान्त कहता है कि तुम अपने को तुच्छ और निकम्मा मत समझो, तुम स्वयं परब्रह्म हो ; तुम में बड़ी शक्ति है। अहा ! यह क्याही उत्तम उपदेश है। इस पर विश्वास कीजिये। जहां आपने आत्मा को छोड़कर शरीर को सब कुछ समझना प्रारम्भ किया वहीं आप की हार हुई। ऐसा नियम है।

दो भाई किसी मुक़द्दमे में एक न्यायाधीश के पास गये। उनमें से एक लखपती था और दूसरा ग़रीब था। न्यायाधीश ने लखपती से पूछा, "क्या बात है कि तुम्हारा भाई ग़रीब रह गया और तुम इतने धनी हो गये।" उसने उत्तर दिया कि पांच वर्ष पूर्व हम लोगों को बराबर २ पैतृक संपत्ति मिली थी। हम में से हरेक ने पचास पचास सहस्र डालर पाया था। यह मनुष्य अपने को धनी समझकर आलसी हो गया। धनी हाथ

से काम करना शान के ख़िलाफ़ समझते हैं, अतः जो कुछ काम उसे करना होता वह अपने नौकरों द्वारा कराता। यदि कोई आवश्यक पत्र आता तो अपने नौकरों को दे देता और कहता जाओ इसका उत्तर लिख दो। सारांश यह कि उसका हरेक काम उसके नौकर ही करते थे। उसने अपना समय खाने, पीने और आनन्द करने में व्यतीत कर दिया। जब मुझे पचास हज़ार डालर मिले तो मैंने किसी के भरोसे पर अपना काम नहीं छोड़ा। जब कुछ करना होता तो स्वयं दौड़ कर करता और अपने नौकरों से यही कहता, 'आओ आओ मेरे साथ काम करो'। मैं कहता "आओ आओ" और मेरा भाई कहता 'जाओ जाओ'। कुछ दिनों के बाद उसके नौकर और मित्रों ने उसका साथ छोड़ दिया और उसकी सारी संपति चली गई। प्रत्युत मेरे और अधिक मित्र हो गये और मेरी संपति भी उत्तरोत्तर बढ़ती चली गई।

जब दूसरों पर भरोसा रखकर हम कहते हैं "जाओ जाओ" तो प्रत्येक वस्तु चली जाती है और जब हम केवल अपनी आत्मा ही पर विश्वास करते हैं तो प्रत्येक वस्तु आप से आप आ जाती है। अगर तुम समझो कि हम दरिद्र और निकम्मे हैं तो तुम दरिद्र और निकम्मे हो जाओगे। प्रत्युत अगर तुम समझो कि हममें बड़ी शक्ति है तो तुम शक्तिशाली हो जाओगे। जैसा सोचोगे वैसा बनोगे।

हिन्दुस्तान के एक स्कूल में इन्सपेक्टर साहब किसी दिन गये। एक अध्यापक ने एक लड़के की ओर संकेत करके कहा कि यह बड़ा तेज़ । इसने मिल्टन का पैराडाइज़ और साहित्य की दूसरी पुस्तकें घोंट डाली हैं और उन्हें ज़बानी सुना भी

सकता है। इन्स्पेक्टर साहब ने लड़के को बुलाया और पूछा "क्यों जी तुम अमुक पुस्तक को सुना सकते हो ?" लड़का वेदान्ती नहीं था। उसने लज्जा से सिर नीचा करके कहा "नहीं साहब मैं कुछ नहीं हूं; मैं कुछ नहीं जानता।" उसने समझा रक्खा था कि नम्र मनुष्यों को इसी प्रकार बोलना चाहिये। इन्स्पेक्टर ने दुबारा पूछा और लड़के ने फिर वही उत्तर दिया। मास्टर साहब मारे क्रोध के आग बबूला हो गये। पास ही एक दूसरा लड़का बैठा था, और यद्यपि उसे सारी पुस्तक याद नहीं थी, किन्तु उसने उठकर यही कहा, "कि जनाब मैंने सम्पूर्ण पुस्तक पढ़ी है। आप प्रश्न कीजिये और मैं उत्तर देना प्रारम्भ करूँ।" इन्स्पेक्टर साहब ने उससे कुछ प्रश्न किये और लड़के ने बड़ी बुद्धिमता से सब का उत्तर दिया और पारितोषिक भी पाया। नतीजा यह निकला कि जैसी आप अपनी क़द्र करेंगे दूसरे उससे बढ़कर आप की क़द्र नहीं करेंगे।

अपने को तुच्छ न समझो क्योंकि जैसे सोचोगे वैसा बनोगे। यदि तुम सोचते हो कि हम परमात्मा हैं तो तुम्हारे परमात्मा होने में कुछ भी संदेह नहीं है। यदि तुम समझते हो कि हम स्वतन्त्र हैं तो तुम्हारे स्वतन्त्र होने में कुछ रुकावट नहीं पड़ सकती।

एक मनुष्य किसी वेदान्ती के घर गया और उसे न पाकर उसके बैठने की पवित्र जगह में आप स्वयं बैठ गया। कुछ देर पश्चात् जब वेदान्ती आया तो नव आगन्तुक ने उससे पूछा, "कि पंडित जी, कृपया यह तो बतलाइये कि ईश्वर क्या

वस्तु है और मनुष्य किस चिड़िये का नाम है।" वेदान्ती कुछ नहीं बोला। उसने क्रोधित होकर ऊटपटांग बकना प्रारम्भ कर दिया और नौकरों से डाटकर कहा कि इस मनुष्य को (अभी) घर से निकाल दो। वेदान्ती के इस प्रकार सहसा बिगड़ जाने पर आगन्तुक मारे डर के कांपने लगा और उसने तत्काल ही वह जगह खाली कर दी। वह बुद्धिमान पुरुष अपने स्थान पर बैठ गया और बोला, "देखो (अपनी ओर इशारा करके) यह ईश्वर और है यह (उसकी ओर इशारा करके) मनुष्य है। यदि तुम शान्त रहते और डर कर इस स्थान को न छोड़ते तो तुम भी ईश्वर हो सकते थे। ऐसा न करने ही से दब्बू बन गये।" इसलिये इस कथन पर पूर्ण विश्वास रखते हुये अपने को साक्षात् ईश्वर समझो। संसार में कौन सी ऐसी वस्तु है जो फिर तुम्हें हानि पहुंचा सके।

जब तक बाहरी शक्तियों (मनुष्यों) पर भरोसा करोगे तब तक धक्के खाते फिरोगे। ईश्वर को अपने भीतर समझ और उसी पर भरोसा कर शरीर को काम में लगा दो सफलता अवश्य मिलेगी। यदि पहाड़ मोहम्मद के पास नहीं जाता तो मुहम्मद पहाड़ के पास जायगा। एक भूखा मनुष्य अपनी भूख बुझाने के लिये आखें बन्द करके किसी स्थान पर बैठ गया और ख्याली पोलाव उड़ाने लगा। थोड़ी देर में लोगों ने देखा कि वह अपने झुलसे हुये मुंह को ठण्डा करने के लिये खोले हुये है। किसी ने पूंछा क्यों क्या मामला है उसने कहा भोजन के साथ मिर्च मुंह में चली गई थी, उसी की कडुआहट मुंह खोल कर दूर कर रहा हूं। इतने ही में एक दूसरे महाशय बोल उठे "अरे भाई यदि तुम्हें ख्याली पोलाव

ही उड़ाना था तो तुमने कोई मीठी बढ़िया वस्तु क्यों नहीं चुनली। वेदान्त के अनुसार इसी प्रकार सारा संसार आप का ख्याली पोलाव है। जब यही बात है तो अपने को पापी और निकम्मा क्यों समझते हो? निडर, स्वावलम्बी ईश्वर का अवतार क्यों नहीं समझते!

इस सिद्धान्त की सचाई पर विश्वास करके जो सर पर आवे सब सह लो और इस संसार को झूठा समझो। क्या तुम नहीं जानते कि ज्योतिष द्वारा जब तारों की दूरी मालूम की जाती है तो उनके सामने इस पृथ्वी की कोई गणना नहीं की जाती। लोग इसे केवल विन्दुमात्र समझते हैं। यदि ऐसी बात है तो बतलाइये तो सही कि आत्मा की असीम और पवित्र शक्ति के सामने यह संसार किस खेत की मूली है। आप प्रकाश के भी प्रकाश हैं; आप यशस्वी हैं; आप स्वतंत्र हैं। उपरोक्त बातों को खूब समझिये ताकि जगत, नाम, कीर्ति, रिश्तेदारी, भलाई, बुराई, मान, अपमान, मित्रों की प्रशंसा और उनकी कठिन आलोचनाओं से आप पर कुछ भी प्रभाव न पड़े। इसी का नाम सफलता की कुंजी है।

दो मनुष्य नयागरा नदी की तीव्र धारा में गिर पड़े। एक ने बहता हुआ एक लकड़ी का कुंदा देखा और अपनी जान बचाने के लिये उसे पकड़ लिया। दूसरे के लिये लोगों ने एक रस्सी फेंक दी। रस्सी यद्यपि कुंदे की तरह भारी नहीं थी, रस्सी यद्यपि बड़ी पतली थी किन्तु उसे पकड़ने वाले मनुष्य के प्राणों की रक्षा हुई। प्रत्युत जिसने बड़ा कुंदा

पकड़ रक्खा था वह गरजती हुई लहरों के बीच पड़ गया और वहीं उसकी मृत्यु हो गई।

उसी प्रकार ऐ संसार के मनुष्यो, तुम लोग इस बाहरी नाम, कीर्ति, धन, दौलत, ज़मीन पर अधिक भरोसा रखते हो। देखने में लट्ठे की तरह यह भारी मालूम पड़ते हैं किन्तु ये सब मुक्ति के साधन नहीं हैं। मुक्ति का साधन पतले डोरे के सदृश होता है। उसका कोई रूप नहीं है। उसे तुम छू नहीं सकते, पकड़ नहीं सकते किन्तु वह तुम्हारी रक्षा रस्सी की तरह कर सकता है संसार के सारे पदार्थ जिनपर तुम भरोसा करते हो तुम्हें निराशा, चिन्ता और दुख के गड्ढे में ढकेल देंगे। इसलिये चौकन्ने हो जाओ, सचाई को दृढ़ता के साथ पकड़ो, बाह्य पदार्थों की अपेक्षा सचाई पर अधिक भरोसा करो। प्राकृति का नियम है कि जब मनुष्य बाह्य पदार्थों पर अधिक भरोसा करने लगता है तभी उसका अधःपतन होता है। अपने को परमात्मा समझो, इन्द्रियों के दास न बनो। आप सुरक्षित रहेंगे।

पड़ोसियों की बातों में पड़कर बहक न जाओ। संसार के सब संबन्ध दुख और चिन्ता की ओर खींच ले जायगें। इसलिये सचाई पर विश्वास रक्खो मुक्ति अवश्य मिलेगी।

संसार को अपनी आत्मा से अधिक महत्वपूर्ण न समझो, कूप मंडूक न बनो, घमंड न करो। डाक्टर जिस प्रकार रोगी को देखता है परन्तु उसकी बीमारी का उसके शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसी प्रकार स्वतंत्र होकर संसार के काम काज तुम भी देखो, किन्तु घमंड और आसक्ति का प्रभाव

अपने ऊपर न पड़ने दो। सब प्रलोभनों को छोड़कर स्वतंत्रता पूर्वक काम करो। इसकी कुछ परवाह नहीं कि तुम्हारे काम को कोई देखता है या नहीं।

सफलता का सातवां साधन

"पवित्रता"

सफलता का अन्तिम और पूर्वोक्त साधनों ही की तरह महत्वपूर्ण साधन पवित्रता है। विचार प्रारब्ध का दूसरा नाम है, अर्थात् जैसे मनुष्य के विचार होते हैं वैसा ही वह बन जाया करता है। यदि आपके विचार अपवित्र हैं, यदि आपका ध्यान पतित करने वाले व्यभिचार की ओर लगा हुआ है तो इसमें संदेह नहीं कि आपके कुत्सित इच्छाओं की पूर्त्ति तो होगी किन्तु साथ ही साथ हृदय विदारक कष्ट और कठिन दुख भी बदले में आपको अवश्य झेलने पड़ेंगे और क्लेश आपके आत्मिक बल की क्षति भी कर देगा। व्यभिचारी सोचता है कि मुझे व्यभिचार से बड़ा आनन्द मिल रहा है किन्तु वह यह भूल जाता है कि इस निंद्य कर्म्म के साथ मेरी जीवन शक्ति भी मिट्टी मे मिली जा रही है। समझ रक्खो जैसा तुम बोओगे वैसा काटोगे भी। परमात्मा को अपनी इच्छा के अनुसार चलने के लिये बाध्य न करो, तुम स्वयं शारीरिक आवश्यकताओं के मामलों में परमात्मा की इच्छा के अनुसार चलो। तुम्हारी इच्छा और परमात्मा की इच्छा एक

हो जानी चाहिये। तुम वही सर्वशक्तिमान परमेश्वर हो जिसने सारे जगत को वैसा ही बनाया है जैसा तुम देखते हो। जैसा आनन्द तुम्हें काम करते समय मिलता है इसी प्रकार का आनन्द तुम्हें अपनी हीन अवस्था में भी होना चाहिये। यदि तुम भटक कर व्यभिचार के गड्ढे में पड़ गये हो तो आवश्यकता है कि यहीं पर तुम परमात्मा का चिन्तन करके अपने दृढ़ संकल्प द्वारा काम लो। इस देश में "कामदेव" को लोग प्रेम का पवित्र नाम देकर उसे अच्छी दृष्टि से देखते हैं। यह कैसी एक उपहासास्पद बात है। ऐसे मनुष्यों की आयु कम हो जाती है। कुत्सित प्रेम और व्यभिचार के कारण उनके आनन्द का समय न्यून हो जाता है। किन्तु ये लोग नहीं समझते। उनकी तबिअत काम की ओर बहुत कम लगती है क्योंकि दिल तो प्रेमिका में लगे हुये हैं। (भाइयो, प्रेमिका को छोड़ कर) अपने काम पर प्रेम करो और उसी में सारा दिल भी लगा दो। काम करते समय अपना चित्त सावधान रक्खो, अपने विचारों को चारों ओर से समेट कर एक ओर लगाओ। इधर उधर के बातों की परवाह न करो और प्राणीमात्र की भलाई करने का विचार हृदय में उत्पन्न होने से परेशान न होवो। लोगों को क्या आवश्यकता है कि वे तुमसे कहें कि हमारी देख रेख करो। अपनी मुक्ति के लिये तुम्हें स्वयं उनकी देख रेख करनी चाहिये। मूर्खों को ज्ञान संचित करने की प्रबल इच्छा रहती है। इसके लिये वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं किन्तु उनकी प्रार्थना व्यर्थ जाती है और बजाय ज्ञान के वे अज्ञान में पड़े रहते हैं। मुझे नहीं मालूम कि वे ज्ञान के पीछे क्यों पड़े रहते हैं। ज्ञान कोई ढूंढने की वस्तु नहीं है। एक

मिनट के लिये सब वासनाओं को एक ओर उठा कर फेंक दे, ओ३म् का जाप करो, आसक्ति और घृणा से कोई सम्बन्ध न रक्खो, अपने चित्त को शांत रक्खो, ज्ञान आप से आप तुम्हारे पास आ जायगा और तुम स्वयं ज्ञान की मूर्त्ति बन जाओगे। स्वार्थ और वासनाओं को छोड़ कर काम करो। आसक्ति की बीमारी से बचे रहो। एक वस्तु की आसक्ति के पीछे तुम्हें और सब वस्तुओं से हाथ धोना पड़ता है। स्वार्थ पूर्ण और कुत्सित विचार ही तुम्हारे काम और जीवन को सांसारिक बना देते हैं। अपना काम करो और शरीर से विलग रहते हुये अचेतन रूप से लभ्य त्याग का अमृत पिओ। फल छोड़ कर काम करने ही का नाम त्याग है। फल की इच्छा करने से क्या प्रयोजन!

अभागे मूर्खों की ऐसी धारणा है कि निष्काम कर्म करने की अपेक्षा काम की सफलता प्राप्त होने पर अधिक आनन्द मिलता है। इन अंधों को नहीं मालूम कि काम पूर्ण होने से इतना आनन्द नहीं मिलता जितना आनन्द काम करने से मिलता है, आनन्द काम के भीतर ढका हुआ है। तुम्हारी सफलता सदैव तुम्हारे साथ है। संसार एक पवित्र मंदिर है और तुम्हारा सारा जीवन एक गाया जाता हुआ भजन है। तुम्हें फल से क्या प्रयोजन, वेतन वृद्धि के लिये शोकाकुल होने से क्या मतलब! यदि तुम्हें बड़ी नौकरी न मिले तो छोटी से घृणा न करो। जो काम तुम्हारे सामने आ जाय उसके करने में अपने मन को डाँवा डोल न करो। यदि कोई काम चटक भड़कदार न हो तो उस से घृणा करने का नाम स्वाभिमान नहीं है। जीवात्मा अथवा अंतरस्थ परमात्मा के

आदर सत्कार ही का नाम स्वाभिमान है। इस भौतिक शरीर के केवल सत्कार से गुण और बुद्धि का नाश होता है। जब तम किसी प्रकार के काम करने के लिये हाथ फैलाओगे तो अच्छे २ आदरणीय पद भी तुमसे मिलने के लिये हाथ फैलायेंगे। यदि तुम ईश्वर को नहीं छोड़ोगे तो ईश्वर भी तुम्हें नहीं छोड़ेगा। तुम्हारे शरीर से कांति निकलने लगेगी। लोग हमारे काम की प्रशंसा करते हैं अथवा निन्दा करते हैं इस पर ध्यान न दो अन्यथा काम से भटक कर धोखे में पड़ जाओगे। तुम्हारा स्वर्ग तुम्हारे भीतर है। बाहरी झूठा आनन्द देने वाली वस्तुओं के पीछे पड़ना अपवित्र और व्यभिचारी नवयुवकों का काम है। इस धोखे में डालने वाले बाहरी आनन्द से साफ़ साफ़ कह दो, "अरे शैतान, तू पीछे हट, मुझे तुझसे कुछ नहीं चाहिये।" तुम स्वयं क्या आनन्द के भँडार नहीं हो?

बस खोजना आनन्द दायक ऋतु उसे सब व्यर्थ है।
जो आत्मा में स्वर्ग सुख की प्राप्ति हेत समर्थ है।

हिन्दुस्तानी मैना या बुलबुल को ताड़ के वृक्ष की चोटी पर बैठा दीजिये सुन्दर मधुर राग उस में स्वयं निकलने लगेगी, उसी प्रकार आप भी अपने चित्त को स्थिर रखिये, आनन्द का स्रोत बिना परिश्रम आप से आप उसमें से वह निकलेगा। ईश्वर बनने के लिये किसी साधन की आवश्यक्ता नहीं है। आत्मा दौड़ धूप से नहीं साक्षात् की जा सक्ता। यदि तुम ईश्वर की ज्योति प्राप्त करना चाहते हो तो और कुछ नहीं, केवल वासनाओं के काले परदे को नोच कर फेंक दो। उसी

नहीं, तुम स्वतन्त्र हो। देखने में जो बेड़ी दासत्व की प्रतीत होती है, वस्तुतः वह स्वतंत्रता की माला है। तुम्हें कोई वस्तु हानि नहीं पहुंचा सक्ती जब तक हानि कारक वस्तु को तुम स्वयं न बुलाओ। तुम्हें कोई तलवार नहीं काट सक्ती जब तक कि तुम यह न सोचो कि यह काट सक्ती है। तुम्हें कोई बेड़ी नहीं बांध सक्ती जब तक कि तुम यह न समझो कि हम बेड़ी से बंधे हुये हैं। टेढ़ी चाल चलना छोड़ दो; विचारों के व्यर्थ पुल न बांधो, कौनसी ऐसी शक्ति संसार में फिर शेष रह जायगी जो आकर तुम्हारे सामने सर न झुकावे। सोचो तो सही तुम ईश्वर हो, इस शरीर की परवाह न करो मानों इसकी स्थिति थी ही नहीं। पानी का बुलबुला जब तक अलग है तब तक बुलबुला है किंतु फूटते ही समुद्र हो जाता है। तुम्हीं सब कुछ हो, तुम्हीं अनन्त परमेश्वर हो। अपने रंग में रंगे रहो। ऐ संसार के (पूर्ण) मनुष्यो तुम्हारे लिये करने को न तो कोई कर्तव्य है और न कोई काम है। सारी प्रकृति तुम्हारी इच्छा पूर्ण करने के लिये हाथ बांधे खड़ी है। संसार इस बात में अपना अहो भाग्य समझता है कि वह तुम्हारा सम्मान करे। निसर्ग देव की सारी शक्तियां घुटना टेक कर तुम्हें सर झुका रही हैं। क्या तुम उनकी ओर ध्यान दोगे?

मालिनी

[१]

उस प्रभू पर श्रद्धा नित्य रक्खो महान।
क्षणिक विभव जानो जो सभी दृश्यमान॥
जलकण सम मानो ये सभी भासमान।
नहिं कुछ इनमें है शांति औ सौख्यमान॥

[२]

यदि तुम शुचि चाहो तेज़, उत्साह, स्फूर्ति;
फिर यदि तुम चाहो शुभ भांडार पूर्ति;
तब तुम पहिचानो सत्व जो आत्म तत्व।
तृण सम सब त्यागों वस्तु जो भ्रांति युक्त॥

हरि गीतिका

[३]

मेरा नहीं संसार में कर्तव्य कोई है प्रभो!
है यह तम्हारे ही लिये सर्वस्त्र मेरा है विभो!
तुम काम के पीछे अहो! हैरान होते क्यों वृथा!
उस सत्व को समझो तथा छोड़ो सभी चिन्ता व्यथा॥

[४]

"शुभ काय्य कैसा आप करते हैं भला देखो अहा"
संसार में ऐसा तुम्हारे हेतु लोगों ने कहा;
फिर भी प्रशंसा पर न भूलो है हलाहल यह सही।
कुछ काम ही तो हीन औ नीचा बनाता है नहीं॥

[५]

अपने लिये मैंने कभी कोई क्रिया ही की नहीं
किसके लिये कर्ता बना यह थाह पाई ही नहीं
फिर भी अहो ये लोग हैं आलोचना करते वृथा।
कब इन्द्रियों के दास मेरी जान सकते हैं कथा?

[६]

प्रत्येक घट मुझसे भरा है, व्याप्त मैं प्रति रोम हूं।
मैं ओ३म् हूं मैं ओ३म् हू मैं ओ३म् हूं मैं ओ३म् हूं॥
तुम राम! आनन्दी सदा आनन्द में ही मग्न हो।
तुम शांत हो, गम्भीर हो, निश्चल तथा निर्विघ्न हो॥

[७]

मेरा अटल आनन्द है, यह भग्न हो सक्ता नहीं;
मेरे अनूपम मार्ग में कुछ विघ्न हो सकता नहीं;
देवों, मनुष्यों, पक्षियों में भी यही मम देह है।
मेरा अनिर्वचनीय यह आनन्द निःसन्देह है॥

[८]

मैं अत्र हूं, मैं तत्र हूं, देखो मुझे सर्वत्र हूं;
मैं हूं "कहां"–यह व्यर्थ है–मैं सब जगह का मित्र हूं।
मैं आज हूं, कल हू, सदा हूं, भेद इसमें कुछ नहीं;
"मैं कब रहा"–यह प्रश्न मेरे हेतु उठ सकता नहीं॥

[९]

मैं कौन हूं, क्या हूं, यही हूं, अन्य हूं, या हूं वही,
ये प्रश्न ही मेरे लिये कुछ सत्य हो सकते नहीं।
मैं आदि हूं, मैं अन्त हूं, मैं ऊंच हूं, मैं नीच हूं;
मैं एक हूं, फिर भी लखो मैं सब जगत के बीच हूं॥

[१०]

शत, पांच हो, या एक हो, मेरे लिये सब एक हैं;
सङ्ख्या नहीं मेरी अहो! यह व्यर्थ एक अनेक हैं।
यदि कर्म, कर्ता, ज्ञान अथवा दृष्टि तुम मुझको कहो;
तो भी नहीं इनसे परे हूं सर्वदा ही मैं अहो।

[११]

जो हो गया, या है अभी, होगा अभी आगे तथा;
"होना" क्रिया के भेद जानो व्यर्थ ही ये सर्वदा।
मैं सत्य हूं, तू सत्य है, आत्मा तथा शुचि सत्य है;
"मैं, तू, तथा वह"-भेद यह जानो अवश्य अनित्य है॥

[१२]

वह भी अनादि-अनन्त है, यह भी अनादि-अनन्त है;
यह सब अनादि अनन्त है, यह सर्वथा सब संत है।
यह अनन्त, अनन्तही से जानिये उत्पन्न है;
फिर भी अनादि अनन्त वह सब भांति से संपन्न है॥

[१३]

जब हानि होती तब अनन्त स्थिति सदा हम जानते;
फिर लाभ होने पर तथा उसकी दशा पहिचानते।
आना तथा जाना अहो! क्षय वृद्धि भी आभास हैं;
फिर भी अनादि अनन्त को यह सिद्ध करते खास हैं॥

ओ३म् ओ३म् ओ३म्

॥ इति ॥

छात्र हितकारी पुस्तकमाला

(१) इस ग्रन्थमाला में नवयुकोपयोगी सदाचार, स्वास्थ्य, नीति और चरित्र सम्बन्धी मौलिक तथा अनुवादित पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं।

(२) इस में इतिहास, जीवनी, उपन्यास, गल्प, नीति और विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं जो उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति करें।

(३) प्रत्येक सज्जन ॥) पेशगी जमा कर इस ग्रन्थमाला का स्थायी ग्राहक बन सकते हैं और उन्हें प्रत्येक प्रकाशित पुस्तक पर एक चौथाई कमीशन दिया जाता है।

(४) पहले की प्रकाशित पुस्तकों का लेना अथवा न लेना उनकी इच्छा पर निर्भर है, परन्तु भविष्य में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक पुस्तक लेनी आवश्यक होगी। हां, सूचना पाते ही यदि सूचित कर देंगे तो वह पुस्तक न भेजी जायगी।

अब तक प्रकाशित पुस्तकें

ईश्वरीय बोध—जगत् प्रख्यात स्वामी विवेकानन्द के गुरु परम हंस श्री रामकृष्ण से कौन परिचित नहीं है? इस पुस्तक में उन्हीं परम हंस जी के चुने हुए उपदेश संग्रह किये गये हैं जो पाठकों के हृदय पर अपूर्व प्रभाव डालते हैं। यह पुस्तक प्रत्येक पुरुष के लिये संग्रहणीय है। मूल्य ।-) है।

(२) सफलता की कुञ्जी—अमेरिका; जापान आदि देशों में वेदान्त का डंका पीटने वाले तथा भारत माता का मुख उज्ज्वल करने वाले स्वामी रामतीर्थ का परिचय देने की आवश्यकता नहीं। यह पुस्तक इन्हीं स्वामीजी के 'सिकरेट आफ सक्सेस' नामक अपूर्व लेख का हिन्दी अनुवाद है। पुस्तक क्या है, जीवन से निराश, और विमुख पुरुषों के लिये संजीवनी और नवयुवकों के लिये संसार में प्रवेश करने की वास्तविक कुंजी है। यदि आप अपना जीवन सुखमय बनाना चाहते हैं, शान्ति सागर में गोता लगाना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। मूल्य केवल ।)

(३) मनुष्य जीवन की उपयोगिता—यह पुस्तक The econamy of human life का अनुवाद है। यह पुस्तक तिब्बत के प्राचीन पुस्तकालय में पडी हुई थी जिसे एक चीनी विद्वान ने खोज निकाली थी और इसका अनुवाद चीनी भाषा में किया। उसी पुस्तक के अंगरेज़ी अनुवाद का यह हिन्दी अनुवाद है। इस पुस्तक की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त जीवन किस प्रकार सुखमय बनाया जा सकता है, भावी विपत्तियों और कठिनाइयों पर किस प्रकार विजय पा सकता है, पति, पत्नि, पुत्र आदि को परस्पर किस प्रकार व्यवहार करना चाहिये, आदि का भली भाँति विवेचन किया गया है। अधिक कहां तक लिखें। पुस्तक की उत्तमता पढ़ने पर ही ज्ञात होगी। डेढ़ सौ से अधिक पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ।||) ।

(४) भारत के दश रत्न—यह जीवनियों का संग्रह है। भीष्म पितामह, श्रीकृष्ण, पृथ्वीराज, महाराणा प्रतापसिंह, समर्थ राम दास, श्री शिवाजी, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द और स्वामी

रामतीर्थ के जीवन चरित्र बड़ी खूबी के साथ संक्षेप में लिखे गये हैं। केवल इसी छोटी सी पुस्तक से आप इन महानुभावों के चरित्र से परिचित हो सकते हैं। मूल्य ।-)

(५) 'ब्रह्मचर्य जीवन है'—यह हिन्दी संसार में अपने विषय की एक ही मौलिक पुस्तक है। ब्रह्मचर्य की प्राचीनकाल में कैसी महिमा थी और उसके महिमा को न जानकर हम लोग किस प्रकार दुःख पा रहे हैं, इसका अनुभव प्रायः सभी को है। प्रस्तुत पुस्तक बड़ी खोज के साथ लिखी गई है। इसके लेखक एक आदर्श ब्रह्मचारी सन्यासी हैं। हम प्रत्येक विद्यार्थी और उनके अभिभावकों से ज़ोर देकर कहते हैं कि वे इस पुस्तक की एक प्रति मंगाकर अवश्य पढ़ें। और इस बात को महसूस करें कि बाल्यकाल और और युवावस्था के प्रवेश काल में ज़रा सी असावधानी से उन्हें भावी सुख से किस प्रकार हाथ धोकर जीवन से निराश होना पड़ता है। दोसौ पृष्ठ से भी अधिक पुस्तक का मूल्य केवल ॥।-) है।

पुस्तकों के मिलने का पता—

केदारनाथ गुप्त,

हेड मास्टर-दारागंज, हाई स्कूल, प्रयाग।